चिंतन

जर्मनी में दक्षिणपंथ की वापसी के वैश्विक संदेश

जर्मनी में सत्ता परिवर्तन यूरोप में दक्षिणपंथ और कंजरवेटिव के बढ़ते प्रभाव को दर्शाता है। सोशल डेमोक्रटिक पार्टी के प्रमुख चांसलर ओलाफ शोल्ज की करारी हार हुई है। 630 सदस्यीय जर्मन संसद (बुंडेस्टाग) में शोल्ज की पार्टी एसडीपी 121 सीटों के साथ तीसरे स्थान पर है। यूरोपीय यूनियन (ईयू) में सबसे बड़े व शक्तिशाली देश जर्मनी में चांसलर शोल्ज के गठबंधन के नवंबर में टूट जाने के चलते करीब सात महीने पहले ही आम चुनाव कराए गए, जिसमें फ्रेडरिक मर्त्ज की पार्टी क्रिश्चियन डेमोक्रेटिक यूनियन (सीडीयू) के कंजरवेटिव गठबंधन को सबसे अधिक सीटें मिली हैं। हालांकि गठबंधन को बहुमत नहीं मिला है। एग्जिट पोल में भी कंजरवेटिव गठबंधन सीडीयू व सीएसयू की जीत का अनुमान लगाया गया था। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद जर्मनी में किसी धुर दक्षिणपंथी गठबंधन की इतनी बड़ी जीत हुई है। हालांकि पूर्व में सीडीयू पार्टी की ही एंजेला मर्केल चांसलर रही हैं। जर्मनी में यह परिवर्तन चौंकाता है। यूरोप में उदार व सोशलिस्ट दलों का दबदबा हाल के वर्षों में मजबूत हुआ है, लेकिन स्थानीय स्तर पर आर्थिक व सामाजिक मुद्दे ने कंजरवेटिव खासतौर वाले दलों के लिए जमीन उर्वरा बना दी है। अर्थव्यवस्था की सुस्त गति, नए रोजगार सृजन की सुस्ती, अप्रवासियों की बढ़ती मौजूदगी, सांस्कृतिक व सामाजिक डेमोग्राफी में बदलाव आदि ऐसी स्थितियां हैं, जिनके चलते कंजरवेटिव दलों को सफलता मिल रही है। अमेरिका में भी अमेरिकी राष्ट्रवाद व संरक्षणवाद का नारा लगाने वाले डोनाल्ड ट्रंप के नेतृत्व में रिपब्लिकन को विजय मिली है। ट्रंप ने जर्मनी में सत्ता परिवर्तन पर खुशी जताई है और इसे जर्मन राष्ट्रवाद के उदय के रूप में उद्धृत किया है। कंजरवेटिव सीडीयू/सीएसयू गठबंधन की जीत के बाद अब फ्रेडरिक मर्त्ज जर्मनी के नए चांसलर बन सकते हैं। 69 वर्षीय मर्त्ज के पास सरकार चलाने का कोई अनुभव नहीं है, लेकिन उन्होंने देश का बेहतर नेतृत्व करने का लोगों से वादा किया है। खास बात है कि दूसरी धुर दक्षिणपंथी पार्टी एएफडी 20 प्रतिशत मत पाकर दूसरे स्थान पर है। यानी पहले व दूसरे स्थान पर दक्षिणपंथी दल हैं। जर्मनी में दक्षिणपंथी गठबंधन के सत्ता में आने के बाद यूरोपीय यूनियन के कामकाज पर भी इसका असर पड़ेगा। ईयू में जर्मनी प्रमुख सदस्य देश है। ओलाफ शोल्ज की सोशल डेमोक्रेटिक पार्टी ने द्वितीय विश्व युद्ध के बाद से अपना सबसे खराब प्रदर्शन किया है। पार्टी को केवल 16.5 प्रतिशत वोट मिले हैं। ग्रीन्स पार्टी को 12 प्रतिशत मत मिले हैं। जर्मनी में यह चुनाव ऐसे समय में हुए हैं जब यूरोप की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था में वर्षों से चले आ रहे ठहराव, अवैध प्रवासियों पर अंकुश लगाने का दबाव तथा यूक्रेन के भविष्य, यूरोप के अमेरिका के साथ गठबंधन को लेकर बढ़ती अनिश्चितता जैसी चिंताएं सामने आ रही हैं। जर्मनी में भी अवैध प्रवासी इस चुनाव में बड़ा मुद्दा रहा। जर्मनी के अंदर कई हमले हुए हैं जिसे अवैध प्रवासियों ने अंजाम दिया है। यूक्रेन युद्ध पर अमेरिका के व्यवहार ने यूरोप को सकते में डाल दिया है। यूक्रेन युद्ध में संयुक्त राष्ट्र में अमेरिका के ट्रंप प्रशासन ने रूस का पक्ष लिया है, जबकि यूरोप यूक्रेन के साथ है। जर्मनी 27 देशों वाले यूरोपीय संघ में सबसे अधिक आबादी वाला देश और नाटो का प्रमुख सदस्य है। अमेरिका के बाद यह यूक्रेन का दूसरा सबसे बड़ा हथियार आपूर्तिकर्ता रहा है। जर्मनी के इस चुनाव में एलन मस्क व रूस का दखल भी दिलचस्प है। भारत के साथ जर्मनी के रिश्ते बेहतर बने रहेंगे।

पर्व विशेष

सोनम लववंशी

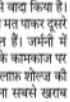

शिवत्व का आह्वान, अनंत से एकत्व की यात्रा

भारतीय संस्कृति में महाशिवरात्रि का विशेष महत्व है। यह एक पर्व नहीं, बल्कि आत्मचिंतन, आत्मशुद्धि और भक्ति की पराकाष्ठा का प्रतीक है। यह पर्व भगवान शिव के विवाह की पावन स्मृति से जुड़ा हुआ है, वहीं दूसरी ओर यह उस अनादि क्षण का भी द्योतक है जब शिव ने अपने तांडव से सृष्टि के नाश और पुनरुत्थान का संदेश दिया था। यह रात्रि, जिसमें जागरण, व्रत, अभिषेक और ध्यान के माध्यम से शिवत्व की अनुभूति की जाती है, आत्मा की यात्रा को परमात्मा की ओर ले जाने वाला मार्ग प्रशस्त करती है। शिव ही आदि और अनंत हैं, जिन्हें संहारक और सृजनहार दोनों रूपों में पूजा जाता है। यह भारतीय दर्शन में मात्र एक देवता नहीं, ब्रह्मांड की मूलभूत ऊर्जा के प्रतीक हैं। वे ध्यान के अधिष्ठाता, योग के प्रवर्तक और लोक कल्याण के प्रतीक हैं। शिव उपासना किसी संकीर्ण धार्मिक दायरे में सीमित नहीं है। यह समस्त मानवता को शांति, संतुलन और सहिष्णुता का पाठ पढ़ाने का माध्यम है। महाशिवरात्रि, इस गूढ़ तत्वज्ञान को आत्मसात करने का श्रेष्ठ अवसर प्रदान करती है। ऐतिहासिक दृष्टि से देखें तो महाशिवरात्रि की परंपरा हजारों वर्षों पुरानी है। शिव पुराण, स्कंद पुराण तथा अन्य धर्मग्रंथों में इसका उल्लेख मिलता है। यह रात्रि शिवलिंग के प्राकट्य की भी मानी जाती है, जो इस विचार को पुष्ट करती है कि शिवलिंग सृजन और संहार के बीच संतुलन का प्रतीक है। अनेक पौराणिक कथाओं के अनुसार, इसी दिन शिव ने समुद्र मंथन से उत्पन्न हलाहल विष को अपने कंठ में धारण कर विश्व की रक्षा की थी, जिससे वे नीलकंठ कहलाए। यह घटना यह दर्शाती है कि शिव केवल सृजन और विनाश के कारक ही नहीं, बल्कि त्याग और करुणा की मूर्ति भी हैं। आज के युग में जब समाज विभिन्न चुनौतियों से जूझ रहा है, जब आत्मकेंद्रितता, भौतिकता और मानसिक अशांति ने लोगों को घेर लिया है, महाशिवरात्रि का संदेश और भी प्रासंगिक हो जाता है। शिव का जीवन और दर्शन हमें सिखाता है कि त्याग, संयम और ध्यान के माध्यम से हम आंतरिक संतुलन प्राप्त कर सकते हैं। उनका 'भोलेनाथ' स्वरूप हमें सरलता और सहजता अपनाने की प्रेरणा देता है, जबकि उनका 'रुद्र' रूप हमें अन्याय और अधर्म के विरुद्ध संघर्ष करने का संबल प्रदान करता है। महाशिवरात्रि के पर्व पर रात्रि जागरण और ध्यान की परंपरा केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं, यह योग और आत्मसाक्षात्कार का अवसर भी है। वैज्ञानिक दृष्टिकोण से भी यह सिद्ध हो चुका है कि इस रात्रि में जागरण और ध्यान से चेतना का स्तर ऊंचा उठता है। शिव का 'महामृत्युंजय मंत्र' इस पर्व पर विशेष रूप से उच्चारित किया जाता है, जो मानसिक शांति और आरोग्य प्रदान करता है। इस मंत्र का प्रभाव न केवल आध्यात्मिक होता है, यह व्यक्ति की चेतना को भी जाग्रत करता है।

महाशिवरात्रि हमें इस बात की भी याद दिलाती है कि मानवता और प्रकृति के बीच संतुलन बनाए रखना आवश्यक है। शिव का स्वरूप पर्यावरण प्रेम का परिचायक है। वे कैलाश पर्वत पर निवास करते हैं, गंगा को अपनी जटा में धारण करते हैं और नागों तथा पशुओं के संरक्षक हैं। उनके यह सभी प्रतीक हमें प्रकृति के संरक्षण और संतुलन की महत्ता का संदेश देते हैं। इस आधुनिक युग में जब तनाव, प्रतिस्पर्धा और आत्मकेंद्रित जीवनशैली बढ़ रही है, तब शिव की साधना हमें सरलता और सादगी का महत्व समझाती है। उनकी ध्यान मुद्रा हमें यह सिखाती है कि बाहरी शोर से दूर रहकर आत्मचिंतन ही वास्तविक सुख का मार्ग है। उनकी तीसरी आंख यह इंगित करती है कि केवल बाह्य दृष्टि से नहीं, आंतरिक दृष्टि से भी संसार को देखना आवश्यक है। महाशिवरात्रि केवल एक पर्व नहीं, ये एक संकल्प है- आध्यात्मिक उत्थान का, आत्मशुद्धि का और मानवता के कल्याण का। इस दिन जब लाखों श्रद्धालु व्रत रखते हैं, शिवलिंग पर जल और दूध अर्पित करते हैं, वे अनजाने में ही इस शाश्वत सत्य की ओर अग्रसर होते हैं कि शिव स्वयं अनंत ऊर्जा हैं, जिन्हें हम अपने भीतर भी अनुभव कर सकते हैं। शिव की उपासना केवल मंदिरों तक सीमित नहीं, यह जीवन के हर क्षेत्र में संतुलन, शांति और संयम स्थापित करने का एक प्रयास भी है। महाशिवरात्रि हमें यह बोध कराती है कि शिव हमारे भीतर हैं, वे हमारे विचारों, हमारे कर्मों और हमारे आचरण में हैं। यह पर्व हमें अपने भीतर झांकने, अपनी कमियों को पहचानने और उन्हें सुधारने की प्रेरणा देता है। यह केवल एक रात्रि का पर्व नहीं, एक निरंतर चलने वाली यात्रा है-आध्यात्मिक जागरण की, आत्मसाक्षात्कार की और शिवत्व की ओर बढ़ने की।

(लेखिका उत्तराय पत्रकार एवं लेखकार्य हैं, ये उनके अपने विचार हैं।)

महाशिवरात्रि

श्वेता गोयल

महाशिवरात्रि भगवान शिव की आराधना और उनके प्रति श्रद्धा प्रकट करने का विशेष अवसर है। फाल्गुन मास की कृष्ण चतुर्दशी को मनाया जाने वाला यह एक महान आध्यात्मिक पर्व है। पुराणों में वर्णित है कि इस दिन भगवान शिव और माता पार्वती का विवाह संपन्न हुआ था, इसलिए इस दिन को भगवान शिव और देवी पार्वती के मिलन के रूप में भी मनाया जाता है। यह पर्व भगवान शिव की आराधना और उनकी दिव्य कृपा प्राप्त करने का विशेष अवसर प्रदान करता है। यह आत्म-साक्षात्कार और मोक्ष की ओर ले जाने वाला पर्व है। योग और ध्यान के मार्ग पर चलने वाले साधकों के लिए यह रात अत्यंत महत्वपूर्ण होती है क्योंकि इसे आध्यात्मिक उन्नति के लिए सर्वोत्तम समय माना जाता है।

ध्यान, योग व आत्म-साक्षात्कार की रात

हिंदू धर्म में मनाए जाने वाले प्रमुख त्योहारों में से एक है महाशिवरात्रि, जो भगवान शिव की आराधना और उनके प्रति श्रद्धा प्रकट करने का विशेष अवसर है। फाल्गुन मास की कृष्ण चतुर्दशी को मनाया जाने वाला यह एक महान आध्यात्मिक पर्व है। पुराणों में वर्णित है कि इस दिन भगवान शिव और माता पार्वती का विवाह संपन्न हुआ था, इसलिए इस दिन को भगवान शिव और देवी पार्वती के मिलन के रूप में भी मनाया जाता है। यह पर्व भगवान शिव की आराधना और उनकी दिव्य कृपा प्राप्त करने का विशेष अवसर प्रदान करता है। पंचांग के अनुसार, फाल्गुन मास की कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी तिथि 26 फरवरी को होगी। महाशिवरात्रि का तात्पर्य 'शिव की महान रात्रि' से है और इस अवसर पर शिवलिंग की विशेष पूजा की जाती है। महाशिवरात्रि का महत्व धार्मिक, आध्यात्मिक और सांस्कृतिक रूप से अत्यधिक है। भारत में ही नहीं बल्कि पूरे विश्व में भक्त इस पर्व को बड़े श्रद्धा और भक्ति के साथ मनाते हैं। शिवभक्त इस दिन उपवास रखते है, रात्रि जागरण करते हैं और भजन-कीर्तन द्वारा भगवान शिव की स्तुति करते हैं। महाशिवरात्रि का उल्लेख कई पुराणों में मिलता है। स्कंद पुराण, शिव पुराण और पद्म पुराण में इस पर्व का विशेष वर्णन किया गया है। शिव पुराण के अनुसार, इस दिन शिवलिंग की पूजा करने से समस्त दोष समाप्त होते हैं और साधक को भगवान शिव की कृपा प्राप्त होती है। इस दिन व्रत रखने वाले भक्तों को विशेष फल की प्राप्ति होती है और उनकी समस्त इच्छाएं पूर्ण होती हैं। कहा जाता है कि जो व्यक्ति महाशिवरात्रि के दिन पूरी रात जागरण करता है और भगवान शिव का ध्यान करता है, वह जन्म-मरण के बंधनों से मुक्त हो जाता है।

महाशिवरात्रि को आध्यात्मिक जागृति की रात भी माना जाता है। इस रात ध्यान और योग करने से मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य में सुधार होता है। यह रात ध्यान और चिंतन के लिए भी बहुत अच्छी है। शैव परंपरा में तो महाशिवरात्रि का विशेष महत्व है क्योंकि यह आत्म-साक्षात्कार और मोक्ष की ओर ले जाने वाला पर्व है। योग और ध्यान के मार्ग पर चलने वाले साधकों के लिए यह रात अत्यंत महत्वपूर्ण होती है क्योंकि इसे आध्यात्मिक उन्नति के लिए सर्वोत्तम समय माना जाता है। कहा जाता है कि इस रात को भगवान शिव की आराधना करने से समस्त पापों का नाश होता है और व्यक्ति को आत्मज्ञान प्राप्त होता है। इस अवसर पर भारत के सभी शिव मंदिरों में भक्तों की अपार भीड़ उमड़ती है। काशी विश्वनाथ, महाकालेश्वर, सोमनाथ, केदारनाथ, ओंकारेश्वर, तिरुवन्नामलाई तथा अन्य प्रसिद्ध ज्योतिर्लिंगों में इस दिन विशेष पूजा-अर्चना की जाती है। भारत में महाशिवरात्रि के अवसर पर अनेक स्थानों पर विशेष मेलों का भी आयोजन किया जाता है। उज्जैन का महाकालेश्वर मंदिर इस दिन भक्तों से खचाखच भरा रहता है और काशी में शिव भक्त गंगा स्नान कर बाबा विश्वनाथ के दर्शन हेतु उमड़ पड़ते हैं। नेपाल में पशुपतिनाथ मंदिर में इस दिन विशेष अनुष्ठान होते हैं। दक्षिण भारत के कई मंदिरों में अभिषेक और रात्रि जागरण का आयोजन होता है। शिव अनादि हैं, शिव अविनाशी हैं और उनकी आराधना मोक्ष और परम आनंद की ओर ले जाती है। शिव को ध्यान और योग का आदिगुरु माना जाता है। शिव का शांत

स्वरूप हमें धैर्य और संतुलन की शिक्षा देता है जबकि उनके रुद्र रूप से हमें अन्याय के विरुद्ध खड़े होने की प्रेरणा मिलती है। शिव अर्धनारीश्वर के रूप में यह संदेश देते हैं कि स्त्री और पुरुष समान हैं और दोनों का समभाव में रहना आवश्यक है। उनके गले में सर्प हमें यह सिखाते हैं कि भय से मुक्त होकर जीवन जीना चाहिए। शिव का त्रिनेत्र ज्ञान, कर्म और भक्ति का प्रतीक है और उनका डमरू सृष्टि की अनाहत ध्वनि का संकेत देता है। महाशिवरात्रि का संदेश केवल धार्मिक नहीं बल्कि आध्यात्मिक और दार्शनिक भी है।

यह पर्व हमें सिखाता है कि हमें जीवन में कठिनाइयों से नहीं डरना चाहिए बल्कि शिव की तरह धैर्य और साहस के साथ उनका सामना करना चाहिए। शिव हमें यह भी सिखाते हैं कि अहंकार को त्यागकर विनम्रता को अपनाना चाहिए क्योंकि सच्ची शक्ति विनम्रता में ही निहित होती है। शिव अपने गणों और भक्तों को समान दृष्टि से देखते हैं, जिससे हमें यह प्रेरणा मिलती है कि हमें भी सभी प्राणियों के प्रति समान दृष्टि रखनी चाहिए। महाशिवरात्रि हमें भक्ति, ध्यान और आत्म संयम का संदेश देती है। यह पर्व हमें शिव के अद्वितीय स्वरूप को समझने और उनके आदर्शों को अपने जीवन में अपनाने की प्रेरणा देता है। शिव हमें सिखाते हैं कि सादगी और सरलता ही जीवन का सार है और सच्ची भक्ति वही है, जो अहंकार और आसक्ति से मुक्त हो। महाशिवरात्रि से संबंधित कई पौराणिक कथाएं प्रचलित हैं। एक अन्य कथा के अनुसार, जब देवताओं और असुरों ने समुद्र मंथन किया था, तब उसमें से अमृत के साथ विष (हलाहल) भी निकला था। उस विष से समस्त सृष्टि के विनाश का संकट उत्पन्न हो गया था। उस समय भगवान शिव ने उस विष को अपने कंठ में धारण कर लिया था और वे 'नीलकंठ' कहलाए। उस घटना की स्मृति में महाशिवरात्रि का पर्व मनाया जाने लगा। महाशिवरात्रि केवल शिव की आराधना का पर्व ही नहीं है बल्कि यह जीवन के गूढ़ रहस्यों को समझने और आत्मचिंतन करने का भी अवसर है। भगवान शिव को 'संहार का देवता' कहा जाता है लेकिन उनका संहार विनाश नहीं बल्कि नवीनीकरण का प्रतीक है। शिव का तांडव नृत्य न केवल विनाश का बल्कि सृजन का भी द्योतक है। यह पर्व हमें जीवन में संतुलन बनाए रखने की प्रेरणा देता है और शिक्षा देता है कि नकारात्मकता से बाहर निकलकर सकारात्मकता की ओर बढ़ना ही सच्चा शिवत्व है। महाशिवरात्रि का महत्व केवल धार्मिक दृष्टिकोण से ही नहीं बल्कि वैज्ञानिक दृष्टिकोण से भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। माना जाता है कि इस दिन पृथ्वी की ऊर्जा विशेष रूप से शिव तत्व से प्रभावित होती है। वैज्ञानिक दृष्टि से देखा जाए तो यह समय ब्रह्मांडीय ऊर्जा के प्रवाह का काल होता है, जब ध्यान और साधना के माध्यम से व्यक्ति अपने भीतर सकारात्मक ऊर्जा का संचार कर सकता है। योगी और साधक इस अवसर का उपयोग आत्मचिंतन और आध्यात्मिक उन्नति के लिए करते हैं।

इस रात ग्रहों की स्थिति ऐसी होती है, जो मानव शरीर और मन पर सकारात्मक प्रभाव डालती है। रात्रि जागरण से सकारात्मक ऊर्जा का प्रवाह होता है और ध्यान तथा साधना से मानसिक शांति प्राप्त होती है। महाशिवरात्रि केवल एक पर्व नहीं बल्कि आत्मशुद्धि, भक्ति और साधना का अद्भुत संगम है। यह पर्व हमें भगवान शिव की कृपा प्राप्त करने का अवसर प्रदान करता है। शिव की आराधना से व्यक्ति न केवल सांसारिक जीवन में सुख प्राप्त करता है बल्कि आध्यात्मिक उन्नति भी करता है। इसलिए, महाशिवरात्रि के दिव्य अवसर पर हम सभी को संकल्प लेना चाहिए कि हम अपने जीवन में सकारात्मकता को अपनाएंगे, आध्यात्मिक उन्नति की ओर अग्रसर होंगे और शिव के आदर्शों को आत्मसात करेंगे।

(लेखिका शिक्षा क्षेत्र से जुड़ी हैं, ये उनके अपने विचार हैं।
लेख पर अपनी प्रतिक्रिया edit@haribhoomi.com पर दे सकते हैं।

वैयक्तिक अहंकार से प्रगति रुक जाती है

संकलित

दर्शन

निरन्तर विकसित होते रहना यह जीवन धर्म है। प्रगति जीवन के अस्तित्व की सूचक है। जहां जीवन है वहां प्रगति है, विकास है। जड़ता में जीवन कहां ? मानव ही नहीं पशु पक्षियों में भी विकास की प्रक्रिया गतिमान रहती है। मानव की विकास प्रक्रिया में एक विशेषता है कि वह अपने विकास को सम्यक दिशा दे सकता है। अक्सर प्रत्येक व्यक्ति अपना श्रेष्ठ विकास ही चाहता है किन्तु फिर भी वह उसे पाने में असफल रहता है तो उसका सबसे बड़ा कारण होता है अहंकार। अहंकार व्यक्ति को सही दिशा में बढ़ने नहीं देता। मानव उस दिशा में दो कदम बढ़ा भी देता है तो उसका अहंकार आकर खड़ा हो जाता है। और वो आगे बढ़े हुए कदम वापस पीछे ले जाता है । अहंम को प्राप्त करने के लिये अहं का त्याग करना होगा। अहंम परमात्मा का वाचक शब्द है। हम इसके उपासक हैं किन्तु अहम्-का त्याग किये बिना अहंम की आराधना कैसे होगी ? आज अधिकांश व्यक्ति बहुत अधिक महत्वाकांक्षी हो गये हैं उन्हें अपनी पूछ और इज्जत चाहिये किन्तु वे औरों को इज्जत नहीं देना चाहते। यह अहंकार ही हमारी सारी विकास योजनाओं को असफल किये जा रहा है। हम ऊंचा लक्ष्य रख कर आगे बढ़ें, यह बुरा नहीं किन्तु अहंकार को छोड़े बिना उस लक्ष्य की प्राप्ति नहीं हो सकती।

-संकलन: कांतिलाल मांडोत

लक्ष्मी जी कहां निवास करतीं हैं

संकलित

प्रेरणा

एक बार की बात है, राजा बलि समय बिताने के लिए एकान्त स्थान पर गधे के रूप में छिपे हुए थे। देवराज इन्द्र उनसे मिलने के लिए उन्हें ढूंढ रहे थे। एक दिन इन्द्र ने उन्हें खोज निकाला और उनके छिपने का कारण जानकर उन्हें काल का महत्व बताया। साथ ही उन्हें तत्वज्ञान का बोध कराया। तभी राजा बलि के शरीर से एक दिव्य रूपात्मा स्त्री निकली। उसे देखकर इन्द्र ने पूछा: दैत्यराज! यह स्त्री कौन है? देवी, मानुषी अथवा आसुरी शक्ति में से कौन-सी शक्ति है? राजा बलि बोले: देवराज! ये देवी तीनों शक्तियों में से कोई नहीं हैं। आप स्वयं पूछ लें। इन्द्र के पूछने पर वे शक्ति बोलीं: देवेन्द्र! मुझे न तो दैत्यराज बलि जानते हैं और न ही तुम या कोई अन्य देवगण। पृथ्वी लोक पर लोग मुझे अनेक नामों से पुकारते हैं। जैसे- श्री, लक्ष्मी आदि। इन्द्र बोले: देवी! आप इतने समय से राजा बलि के पास हैं लेकिन ऐसा क्या कारण है कि आप इन्हें छोड़कर मेरी ओर आ रही हैं? लक्ष्मी जी बोलीं: देवेन्द्र! मुझे मेरे स्थान से कोई भी हटा या डिगा नहीं सकता है। मैं सभी के पास काल के अनुसार आती-जाती रहती हूं। जैसा काल का प्रभाव होता है मैं उतने ही समय तक उसके पास रहती हूं। अर्थात मैं समयानुसार एक को छोड़कर दूसरे के पास निवास करती हूं। इन्द्र बोले: देवी! आप असुरों के यहां निवास क्यों नहीं करतीं? लक्ष्मी जी बोलीं: देवेन्द्र! मेरा निवास वहीं होता है जहां सत्य हो, धर्म के अनुसार कार्य होते हों, व्रत और दान देने के कार्य होते हों। लेकिन असुर भ्रष्ट हो रहे हैं। ये पाहले इंद्रियों को वश में कर सकते थे।

अंतर्मन

आज की पाती

सत्यम शिवम सुंदरम

अधिकतर लोग समझते हैं कि शिव और शंकर एक ही है। परंतु वास्तव में शिव रचनकार है और शंकर रचना है। शिव अनादी है, तो शंकर सूक्ष्म शरीर धारी देवता है। मूलतः शिव इस संपूर्ण सृष्टि के रचयिता हैं और जिसे हम सभी परमपिता परमात्मा के नाम से याद करते हैं, वही शिव है। जिस प्रकार एक पिता अपनी संतानों से प्रेम करता है और उनके कल्याण के लिए कार्य करता है, वैसे ही हम सब आत्माओं के पिता शिव भी हमसे प्रेम करते हैं और हमारे कल्याण के लिए ही इस धरा पर अवतरित होते हैं, जिसे हम शिव-जयंती व शिवरात्रि के रूप में मनाते हैं। दरअसल हम सभी आत्माएं अपने-अपने कर्मों के अनुसार फल पते हुए विभिन्न जन्म लेती हैं। सत्य ही शिव है और शिव ही सुंदर है।

-संदीप गुप्ता, पन्नारी

ट्रेंड

विपक्ष की स्वीकृति

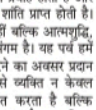

हमारे विधायी दल पहले विश्वी चीज का उपयोग उठाते हैं, विरोध करते हैं, पर्दा से भागने का प्रयास करते हैं और अंततः उसमें स्वीकृति भी देने के लिए तत्पर होते हैं, लोकतंत्रवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष की स्थान बदलने उन्नाव, यह उनकी स्वीकृति का ही प्रमाण है..

-योगी आदित्यनाथ, सीएम, उप्र

समय बड़ा बलवान

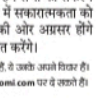

नेता प्रतिपक्ष होते हुए कई बार विजेंद्र गुप्ता जी के साथ दुर्व्यवहार किया गया । आज वही विजेंद्र गुप्ता जी को दिल्ली विधानसभा का स्पीकर नियुक्त किया गया है । समय बड़ा बलवान है।

-रेखा गुप्ता, सीएम, दिल्ली

बाबा साहेब की फोटो

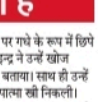

दिल्ली की नई बीजेपी सरकार ने बाबा साहेब की फोटो हटाकर प्रधानमंत्री मोदी जी की फोटो लगा दी। वे सही नहीं है। मेरी बीजेपी से प्रार्थना है। आप प्रधानमंत्री जी की फोटो लगा लीजिए लेकिन बाबा साहेब की फोटो नहीं हटाने दीजिए।

-अरविंद केजरीवाल, पूर्व सीएम, दिल्ली

ब्रह्मांड में कुछ खास

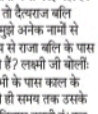

पहले सुने थे कि ब्रह्मांड में एक बहुत बड़ा घोटे सेंसर बनाया जा रहा है। लेकिन अब लगता है तब है कि हर घोड़े वहां जाने की इच्छा महसूस कर रहा है। क्या ब्रह्मांड में कुछ खास होने वाला है?

-सेवार कपूर, शिल्पकार

अपने विचार

हरिभूमि कार्यालय

टिकरापारा, रायपुर में पत्र के माध्यम से या फैक्स : 0771-4242222, 23 पर या सीधे मेल से hbcgpati@gmail.com पर भेज सकते हैं।

करंट अफेयर

ट्रंप, पुतिन व मस्क सभी की नेतृत्व शैली एक जैसी

तानाशाही बढ़ती हुई दिखाई दे रही है। रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन, अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप और यहां तक कि गैर-निर्वाचित उद्यमी एलन मस्क भी 'राजाओं' की तरह हुक्म चला रहे हैं। कुछ लोग इन नेताओं को 'प्रामाणिक' कह सकते हैं क्योंकि वे वही चाहते हैं और अक्सर वही करते हैं जो वे मानते हैं। अमेरिका में संघीय अदालत ने नुकसान को रोकने के लिए कार्यस्थल पर विविधता, समानता और समावेशन कार्यक्रमों पर प्रतिबंध लगाने संबंधी ट्रंप के कार्यकारी आदेश पर रोक लगा दी थी। शोधकर्ताओं का मानना था कि प्रामाणिकता स्वाभाविक रूप से अच्छी और नैतिक होती है। लेकिन जैसे-जैसे प्रामाणिक नेतृत्व अनुसंधान मजबूत प्रयोगात्मक तरीकों के साथ अधिक परिष्कृत होता जा रहा है, इस शक्तिशाली दृष्टिकोण के बारे में हम जो जानते हैं वह तेजी से बदल रहा है। नेता जो कहते हैं और करते हैं, उससे उनके मूल्यों के बारे में शक्तिशाली संदेश मिलता है। डिजिटल युग में जहां हर ट्वीट और सार्वजनिक कार्य की जांच की जाती है, वहां कर्मचारियों और मतदाताओं के लिए इन संकेतों को समझना महत्वपूर्ण है। आज की अस्थिर दुनिया में नेतृत्व करने के इच्छुक किसी भी व्यक्ति के लिए प्रामाणिक नेतृत्व व्यवहार करने के इस नए तरीके को अपनाना बहुत महत्वपूर्ण है।

ऑफ बीट

मंगल पर जीवन हमारे पेट के सूक्ष्म जीवों की तरह होगा

अब तक प्रचलित मान्यता यह थी कि जीवन केवल उन परिस्थितियों में ही संभव है, जहां बहुकोशिकीय जीव फलते-फूलते देखे गए हैं। धनी की मौजूदगी, शून्य से 40 डिग्री सेल्सियस के बीच तापमान, तटस्थ श्रेणी में पीएच, कम लवणता और सूर्य या समाकक्ष ऊर्जा स्रोत का प्रवाह जीवन पनपने के लिए आवश्यक माने जाते थे। हालांकि, 20वीं सदी के मध्य में सूक्ष्मजीव विज्ञानी थॉमस डी ब्रॉक ने 'येलोस्टोन नेशनल पार्क' के गर्म झरनों में रहने वाले बैक्टीरिया की खोज की, जहां तापमान 70 डिग्री सेल्सियस से अधिक है। हालांकि, उस समय यह खोज दूसरे खगोलीय पिंडों पर जीवन की संभावनाओं की तलाश से संबंधित नहीं थी, लेकिन इसने इसकी वैज्ञानिक संभावनाओं को व्यापक बना दिया। तब से, 'एक्सट्रीमोफाइल' (अति वातावरण में उत्तरजीवित वाले सूक्ष्मजीव) के नाम से जाने जाने जीवों को पृथ्वी पर कई तरह की चरम स्थितियों में पनपते पाया गया है, छुपीय बर्फ में पड़ी दरारों से लेकर गहरे समुद्र में मौजूद उच्च दबाव क्षेत्र तक में। बादलों में छोटे निलंबित कणों से घिरके हुए और मृत सागर जैसे अत्यधिक खारे वातावरण में या रिखे टिंटी जैसे अत्यधिक अम्लीय वातावरण में ये बैक्टीरिया पाए गए हैं। कुछ 'एक्सट्रीमोफाइल' उच्च स्तर की विकिरण के प्रति भी प्रतिरोधी होते हैं।

कठघरे में आप

केजरीवाल सरकार को लगभग नौ माह पूर्व गिरफ्तार एवं न्यायालय में पेश होना पड़ा। यह पहली बार है जब किसी मौजूदा मुख्यमंत्री को गिरफ्तार किया गया हो। यह घटनाक्रम आम आदमी पार्टी के संयोजक को कठघरे में खड़ा करता है। यह सही है कि अभी उन्हें दोषी नहीं ठहराया गया है। अदालत का फैसला ही अंतिम होगा। लेकिन इस घटनाक्रम ने आम आदमी पार्टी के चरित्र को उजागर कर दिया है। यह पार्टी भ्रष्टाचार के खिलाफ जन्मी थी। उसने भ्रष्टाचार के खिलाफ जनता के बीच जो भरोसा पैदा किया था, वह टूटा है। यह पार्टी

विचार

नवभारत टाइम्स

नवभारत टाइम्स । नई दिल्ली। बुधवार, 26 फरवरी 2025

अमेरिका-रूस एक साथ

रूस-यूक्रेन युद्ध को लेकर संयुक्त राष्ट्र के मंच पर सोमवार को दिखी रस्साकशी ने यह स्पष्ट कर दिया कि द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद बने और उस समय से लगभग निरंतरता में चले आ रहे वैश्विक समीकरण बिल्कुल बदल चुके हैं। इसके बाद फ्रांसीसी राष्ट्रपति इमैनुअल मैक्रों की अमेरिकी राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रंप के साथ वाइट हाउस में हुई मुलाकात के दौरान अमेरिका और यूरोपीय देशों के बीच की यह दरार और गहरी दिखी।

यूक्रेन पर बंटे US-यूरोप

ऐतिहासिक दृश्य | संयुक्त राष्ट्र के मंच पर सोमवार को दिखा वह दुर्लभ दृश्य वाकई ऐतिहासिक कहा जाएगा जब यूक्रेन युद्ध से जुड़े प्रस्ताव पर अमेरिका और रूस एक पाले में खड़े थे और अमेरिका के निकट सहयोगी माने जाने वाले ब्रिटेन और फ्रांस जैसे देश उनका विरोध कर रहे थे। स्थिति यह हुई कि अमेरिका को संयुक्त राष्ट्र महासभा में लाए अपने ही प्रस्ताव पर वोटिंग से दूर रहना पड़ा क्योंकि उसमें ऐसे संशोधन मंजूर कर लिए गए, जो उसे स्वीकार्य नहीं थे।

बदला अमेरिकी रुख | इस सारी हलचल की वजह यह है कि राष्ट्रपति ट्रंप के सत्ता में आने के बाद अमेरिका के रुख में अचानक 180 डिग्री का फर्क आ गया है। अमेरिका अब यूक्रेनी राष्ट्रपति वोलोडिमीर जेलेंस्की को तानाशाह बता रहा है जबकि यूरोपीय देश रूस को हमलावर राष्ट्र के रूप में चित्रित करने पर अड़े हुए हैं।

वाइट हाउस में टकराव का साया | इस टकराव का साया सोमवार को ही वाइट हाउस में हुई ट्रंप-मैक्रों मुलाकात के दौरान भी नजर आया। संयुक्त प्रेस कॉन्फ्रेंस के दौरान जहां ट्रंप ने पूतिन से हुई बातचीत के हवाले से शांति की संभावना जताई वहीं मैक्रों ने साफ किया कि इस शांति का मतलब यूक्रेन का समर्पण नहीं हो सकता, न ही बिना किसी गारंटी के युद्ध विराम हो सकता है। उन्होंने यह भी कहा कि प्रस्तावित शांति समझौते में यूक्रेन की संप्रभुता की पूरी गुंजाइश होनी चाहिए।

भारत शांति का पक्षधर | जहां तक भारत का सवाल है तो वह पहले से ही खुद को निष्पक्ष नहीं बल्कि शांति का पक्षधर बताता रहा है। ऐसे में सभी पक्षों के प्रयास से रूस-यूक्रेन युद्ध बंद होता है और शांति की कोई राह निकलती है, तो वह निश्चित रूप से पूरी दुनिया के लिए सुकून की बात होगी। लेकिन जिस तरह के मतभेद पश्चिमी खेमे में उभरे हैं, वे तुरंत मिटने वाले नहीं हैं। अंतरराष्ट्रीय संबंधों का नया स्वरूप इन नई वास्तविकताओं के बीच से ही उभरेगा।

नज़रिया

नाम में क्या है

शुभम देशमुख

यह जून 2024 की बात है। मेरा दोस्त रवि, कानपुर से कोलकाता जा रहा था। लेकिन, ट्रेन यात्रा शुरू करने से पहले ही कानपुर रेलवे स्टेशन पर उसके साथ हादसा हो गया। दरअसल, प्लैटफॉर्म पर टेक्टाइल यानी उभरे डिजाइन वाली टाइल्स नहीं लगी थीं। रवि दृष्टिबाधित है, तो उसे अंदाजा ही नहीं लगा और वह सीधे पटरियों पर जा गिरा। किसी तरह वह खुद ही प्लैटफॉर्म पर वापस चढ़ा और अपनी ट्रेन में बैठा। लेकिन, गिरने से उसकी कमर में काफी दर्द हो रहा था। उसने मुझे फोन कर पूरी घटना बताई। मैंने रेल मंत्री को टैग करते हुए ट्वीट किया और उसमें अपने दोस्त की पूरी डिटेल डाल दी। ट्वीट करने के कुछ समय बाद ही उसे चिकित्सकीय सहायता मिल गई। लेकिन, यहां असली सवाल रह जाता है कि क्या रवि के साथ यह हादसा होने से रोका जा सकता था? दिव्यांगों के बारे में पुरानी सलाहों और चेतावनियों को क्यों नजरअंदाज किया गया?

सोचना होगा कि दिव्यांग नाम देने से क्या स्थितियां बदल जाती हैं? कोई शब्द हमारे जीवन में जादू नहीं कर सकता। सच तो यही है कि हमें रोजमर्रा की जिंदगी में अनगिनत संघर्षों से जूझना पड़ता है, रेल सफर तो बस एक उदाहरण है। सोचिए, अगर किसी बेरोजगार को हर दिन 'मालिक' कह कर पुकारा जाए तो क्या वह अमीर बन जाएगा? नहीं न! बहुत से लोग मुझसे कहते हैं कि विकलांग को दिव्यांग कहने के पीछे एक सकारात्मक विचार है। मैं मानता हूं कि ऐसा हो सकता है, लेकिन यह विचार काम नहीं कर रहा। कम से कम मेरे व्यक्तिगत अनुभव तो यही कहते हैं। रवि के साथ घटी घटना बस एक उदाहरण है, ऐसी कई कठिनाइयों से हमें रोजाना जूझना पड़ता है।

नाम बदलना कोई समाधान नहीं है। बदलाव बुनियादी व्यवस्था में होना चाहिए। सिस्टम हमारे प्रति ज्यादा संवेदनशील हो और हमारी समस्याओं को समझे। हमारी लड़ाई सम्मान की है, असल समानता की है। हमें कागजी फूल नहीं, ठोस नीतियां चाहिए। कोई नया नाम नहीं, अवसर चाहिए। यह समाज तभी बदलेगा जब विकलांगता पर मीठी-मीठी बातें करने के बजाय इसे एक गंभीर विमर्श में लाया जाएगा।

एकदा

अन्न का मान

यह घटना जामिया मिल्लिया इस्लामिया विश्वविद्यालय की है। एक दिन हॉस्टल के छात्रों को खाने में बैंगन का भरता और रोटी मिली। स्टूडेंट्स मुंह बनाने लगे। मेस में हंगामा हो गया। नाराज छात्रों ने रोटी को तोड़कर उस पर पानी डाला और प्लेटों को हटा दिया। उधर, मेस के बाहर एक शख्स स्टूडेंट्स के जूते-चप्पलों को करीने से सजा रहा था। छात्र खाना खाने से पहले जूते-चप्पल बाहर उतार दिया करते थे। शोर जब बाहर भी पहुंचा, तो वह शख्स भीतर आ गया। उसने स्टूडेंट्स से उनकी नाराजगी का कारण पूछा। वह शख्स कभी-कभार छात्रों के बीच बैठकर ही खा लिया करता था, तो सारे बच्चे उसे जानते थे। उसने ध्यान से बात सुनी और फिर पानी में भीगे रोटी के टुकड़ों को उठा-उठाकर भरता से खाने लगा। अचानक उस शख्स ने स्टूडेंट्स की आंखों में उठ रहे सवालों को पढ़ लिया और खाना रोक कर कहा, 'तुम लोगों को मालूम नहीं कि आसपास की बस्तियों में ऐसे लोग भी रहते हैं, जिन्हें तुम्हारी ये फेंकी हुई रोटी मिल जाए, तो वे भूखे नहीं सोएंगे। लेकिन, तुमने इसे खाने लायक भी नहीं छोड़ा। इसलिए सोचा कि मैं इसे खा लूं तो कम से कम मेरा खाना किसी भूखे को दिया जा सकेगा।' अन्न के अनादर को अपराध मानने वाले वह व्यक्ति और कोई नहीं महान शिक्षाविद् डॉक्टर जाकिर हुसैन थे, जो हमारे देश के तीसरे राष्ट्रपति हुए।

संकलन : दीनदयाल मुरारका

महाराष्ट्र से सीएम फडणवीस और डिप्टी सीएम शिंदे के बीच तकरार की ख़बरें लगातार आ रहीं

महायुति सरकार में इतनी टेंशन क्यों है

गंगाधर ढोबले

महाराष्ट्र की राजनीति में फिर उथलपुथल है। BJP, एकनाथ शिंदे की शिवसेना और अजित पवार वाली एनसीपी की सत्तारूढ़ महायुति में दरार के स्पष्ट संकेत हैं। पिछले साल अक्टूबर में विधानसभा चुनाव हुए थे। उसके बाद से मतभेद और टकराव के कई घटनाक्रम हुए। महायुति में अब तक जो कुछ हुआ, उस पर एक नजर डालते हैं :

- चुनाव से पहले सीटों के बंटवारे को लेकर पेच फंसा।
- चुनाव बाद मुख्यमंत्री के चयन को लेकर BJP-शिंदे में अनबन। शिंदे मुख्यमंत्री पद नहीं छोड़ना चाहते थे और BJP देवेंद्र फडणवीस के नाम पर अड़ी थी। आखिर में BJP हाईकमान के हस्तक्षेप के बाद शिंदे डिप्टी सीएम बनने को राजी हुए।
- शिंदे अगर राजी न होते तो भी BJP के पास प्लान B था। शिंदे के साथी उदय सामंत सीएम फडणवीस के करीबी माने जाते हैं। उनके साथ 20 विधायक BJP के पाले में आने को तैयार थे। शिंदे सेना के 57 विधायक हैं। उनमें से 20 अलग होते, तो दलबदल कानून लागू नहीं होता। उदय सामंत डिप्टी सीएम बनते।
- मंत्रिमंडल में विभागों के बंटवारे पर खींचतान चलती रही। शिंदे गृह मंत्रालय चाहते थे, लेकिन कोई सीएम गृह विभाग दूसरे को नहीं देता। शिंदे ने मन मसोस कर शहर विकास विभाग स्वीकार किया।
- फिर जिलों के गार्जियन मंत्रियों की नियुक्ति को लेकर विवाद शुरू हुआ। फडणवीस ने नासिक में अपनी पार्टी के गिरीश महाजन और रायगढ़ में अजित की पार्टी की अदिति तटकरे को नियुक्त किया। शिंदे के विरोध पर 24 घंटे में यह निर्णय स्थगित करना पड़ा। मामला अब तक नहीं सुलझा है।
- राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण के पुनर्गठन में एकनाथ शिंदे का नाम नहीं था। बाद में नियमों में बदलाव कर उन्हें शामिल किया गया।
- महाराष्ट्र राज्य सड़क परिवहन निगम के अध्यक्ष अमूमन परिवहन मंत्री होते हैं। परिवहन मंत्रालय शिंदे सेना के प्रताप सरनाईक के पास है। उनके बजाय अतिरिक्त मुख्य सचिव संजय सेठी को अध्यक्ष बना दिया गया। विवाद अभी सुलझा नहीं है।
- अपने कार्यकाल के दौरान की कुछ लोकप्रिय योजनाओं पर पुनर्विचार की पेशकश से भी शिंदे नाराज हैं। इनमें लाड़ली बहना और त्यौहारों के समय गरीबों को मुफ्त दी जाने वाली राशन किट योजना 'आनंदाचा शिधा' भी शामिल हैं।

महाराष्ट्र की महायुति सरकार में दरार बढ़ने के संकेत

राजनीतिक घटनाक्रम

- अजित पवार भी शिंदे के खिलाफ
- आगे चुनाव में हो सकता है टकराव
- अभी सरकार पर कोई खतरा नहीं

शिंदे की नाराजगी | इस घटनाक्रम पर गौर करें तो शिंदे-BJP टकराव की परतें खुलती नजर आएंगी। शिंदे को यह महसूस होना स्वाभाविक है कि उन्हें घेरा जा रहा है। शिंदे ने अपनी नाराजगी छिपा भी नहीं रखी है। एक-दो बार वह मंत्रिमंडल की बैठक में नहीं गए। BJP या अजित पवार की बैठकों का उन्होंने बहिष्कार किया। उसी विषय पर अपनी स्वतंत्र बैठक बुलाई। मुख्यमंत्री सहायता निधि की तरह ही अपना स्वतंत्र सहायता फंड भी बना लिया है। ऐसा लगता है कि शिंदे को हाशिए पर लाने के लिए BJP और अजित पवार एक हो गए हैं।

- एकनाथ शिंदे अपनी पार्टी का विस्तार राज्य के बाहर करना चाहते हैं। इससे भी BJP और अजित दादा पवार के कान खड़े हो गए।
- शिंदे के 20 विधायकों की सुरक्षा फडणवीस ने घटा दी। BJP और NCP के कुछ विधायकों की सुरक्षा भी घटाई गई है, लेकिन उनकी संख्या बहुत कम है।

घेरने की तैयारी | 2029 का चुनाव अकेले अपने दम पर जीतने की रणनीति का पहला टारगेट शिंदे ही लगते हैं। शिंदे को उनके गृह जिले ठाणे में घेरा जा रहा है। यह मोर्चा BJP के मंत्री गणेश नाईक संभाल रहे हैं। उन्होंने जिले में शत-प्रतिशत BJP का नारा दिया है। विदर्भ में भी शिंदे की BJP नाकाबंदी कर रही है। रामटेक से शिंदे सेना के मंत्री आशीष जायसवाल जीते हैं। उनके कट्टर विरोधी मल्लिकार्जुन रेड्डी को BJP ने अपना लिया है।

BJP से चुनौती | कोंकण इलाके में भी शिंदे का टकराव BJP से होगा। वहां उद्धव ठाकरे की शिवसेना के पैर उखड़ गए हैं। उद्धव की पार्टी के पास विनायक राउत, वैभव नाईक और भास्कर जाधव जैसे गिने-चुने नेता बचे हैं। इनका भी कोई भरोसा नहीं। वैसे भी ज्यादातर शिवसैनिक शिंदे के साथ दिखाई देते हैं। इसलिए शिंदे को कोंकण में उद्धव से नहीं, BJP से चुनौती मिलेगी। अन्य अंचलों में भी कमोबेश यही स्थिति है।

विकल्प नहीं | ये सारी बातें साफ कह रही हैं महायुति में सब ठीक नहीं है। यह दरार अवसर आते ही और चौड़ी होगी, लेकिन अभी वह समय नहीं आया है। सरकार को कोई खतरा नहीं है। शिंदे के पास भी अपनी नाराजगी जताने के अलावा अभी दूसरा कोई विकल्प नहीं है।

(लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं)

नया पदार्थ, नई चिप, नई कंप्यूटिंग

अब तक हमने जाना है कि पदार्थ तीन प्रकार के होते हैं- ठोस, तरल व गैस। माइक्रोसॉफ्ट की मानें तो अब दुनिया में एक नया पदार्थ और आ चुका है, नाम है मायोराना जीरो मोड (MZM)। इससे बनी क्वांटम चिप मायोराना-1, जिसे क्वांटम कंप्यूटिंग का भविष्य कहा जा रहा है। समझते हैं क्वांटम कंप्यूटरों के कल, आज और कल के बारे में :

मायोराना - 1

- मायोराना जीरो मोड (MZM) से नई तकनीक।
- मायोराना इटालियन वैज्ञानिक के नाम पर, 32 की उम्र में हुए लापता।
- MZM साथ मिलकर डेटा प्रोसेस करते हैं।
- टोपोकंडक्टर से बनी इनकी नई अवस्था ।
- मायोराना 1 पहला टोपोलॉजिकल प्रॉसेसर।
- टोपोकंडक्टर क्यूबिट्स तेज और छोटे।
- चिप 10 लाख क्यूबिट्स तक स्केलेबल।

कैसी-कैसी चिप

सुपरकंडक्टिंग क्यूबिट : IBM, Google, चीन अग्रणी।

ट्रैप्ड आयन : IonQ, Quantinuum

फोटॉनिक : कनाडा, चीन की बढ़त।

क्वांटम गाथा

19वीं सदी की थियरी।

जैन स्यादवाद के अनुरूप।

चीनी यिन यांग के जैसी

क्या बदलेगा

- प्रदूषकों को उपयोगी उत्पादों में बदलने में मदद।
- एंजाइमों का स्वास्थ्य और कृषि में बेहतर उपयोग।
- मिट्टी की उर्वरता बढ़ाने में मदद।
- स्वास्थ्य सेवा और दवा में क्रांति।
- AI के साथ मिलकर नई सामग्री बनाने में मदद।

बात-बहस

ब्यावहारिक क्वांटम कंप्यूटिंग अनुप्रयोग 15-20 वर्षों से पहले संभव नहीं है। - *जेन्सन हुआंग, CEO, NVIDIA*

मायोराना आने के बाद अब हम इसे दशकों दूर नहीं बल्कि कुछ वर्षों की दूरी पर मानते हैं। - *सत्या नायक, तकनीकी फेलो, माइक्रोसॉफ्ट*

क्वांटम निवेश

अमेरिका 2018 में क्वांटम कानून, $1.2 अरब का बजट।

चीन 2016 में क्वांटम कॉम रणनीतिक उद्योग घोषित।

यूके 2013 में शुरू की नैशनल क्वांटम स्ट्रैटेजी।

कनाडा 2016 में क्वांटम तकनीक में 50 मिलियन डॉलर का निवेश।

भारतीय मिशन

8 सालों में 50 से 1000 क्यूबिट्स की मीडियम रेंज क्षमता

1000 फिजिकल क्यूबिट वाले कंप्यूटर अगले 8 साल में बनेंगे

2023-2030 तक चलेगा मिशन, खर्च होंगे 6,003.65 करोड़ रु.

कल्पना कीजिए एक ऐसी चिप जो आपकी हथेली में फिट हो जाए और जो ऐसी समस्याओं को हल कर दे जिन्हें आज सभी कंप्यूटर मिलकर भी हल नहीं कर सकते। - सत्या नाडेला, CEO, माइक्रोसॉफ्ट

क्वांटम कीवर्ड्स

क्वांटम कंप्यूटर सभी चाबियां एक साथ आजमाने वाली तिजोरी।

क्वांटम स्टेट धुंधली तस्वीर, साफ होते ही सबकुछ गायब।

क्यूबिट एक साथ 0 और 1, जैसे चित-पट साथ आए।

टोपोकंडक्टर नई अवस्था वाला पदार्थ, तेज और स्थिर क्यूबिट बनाता है।

टोपोलॉजिकल क्यूबिट रस्सी की गांठ जैसे, हिलने पर भी टिकी रहती है।

कंटेंट : राहुल पाण्डेय, ग्राफिक्स : अमित धींगड़ा

THE SPEAKING TREE
और पढ़ने के लिए देखें
www.speakingtree.nbt.in

शरीर और मन के विश्राम का पर्व है महाशिवरात्रि

स्वामी अवधेशानंद गिरि

महाशिवरात्रि आत्म जागरण का महान पर्व है। मृत्युंजय भगवान शंकर ज्ञान, वैराग्य और साधुता के परम आदर्श हैं। वह एक तरफ 'रुद्र' रूप है, तो दूसरी तरफ भोलेनाथ भी। दुष्ट दैत्यों के संहार में कालरूप हैं, तो दीन-दुखियों की सहायता करने में दया के सागर। भगवान शिव सृष्टि के रचयिता हैं और संहारक भी। वह सही अर्थों में संपूर्ण देव हैं, आदि और अंत हैं, देवों के देव महादेव हैं। सभी देवी-देवताओं में वह शिव हैं। वह अपने भक्तों को भौतिक सुख प्रदान करते हुए भी खुद इन सुख-सुविधाओं से विरक्त हैं। भक्तों की हर मनोकामना को पूर्ण करने वाले आशुतोष हैं।

सभी पुराणों में भगवान शिव के दिव्य और रमणीय चरित्रों का चित्रण किया गया है। महाशिवरात्रि के विषय में ऐसी मान्यता है कि इस दिन भगवान भोलेनाथ का अंश प्रत्येक शिवलिंग में रहता है। इस दिन शिव की उपासना और पूजा करने से वह शीघ्र प्रसन्न होते हैं। शिवपुराण के अनुसार, सृष्टि के निर्माण के समय महाशिवरात्रि की मध्यरात्रि में शिव का रूद्र रूप प्रकट हुआ था। श्रद्धालु इस दिन रजस और तमस को संतुलन में लाने और सत्व में वृद्धि के लिए उपवास करते हैं। पर्यावरण, वातावरण और मन के पांच तत्वों में संतुलन लाने के लिए नमः शिवाय का जाप किया जाता है।

भगवान शिव का त्याग अनुपम है। अन्य सभी देवता समुद्र मंथन से निकले हुए लक्ष्मी, कामधेनु, कल्पवृक्ष और अमृत ले गए, लेकिन आप अपने भाग का हलाहल पान करके संसार की रक्षा के लिए नीलकंठ बन गए। भगवान शंकर ही संगीत और नृत्य कला के आदि आचार्य हैं। तांडव नृत्य करते समय इनके डमरू से सातों स्वर प्रकट हुए। इनका तांडव ही नृत्य कला का प्रारंभ है। समस्त विद्याओं के मूल स्थान भी भगवान शिव ही हैं। ज्ञान, बल, इच्छा और क्रियाशक्ति में भगवान शिव श्रेष्ठ हैं। वह सभी के रक्षक, पालक और नियंता होने के कारण वह महेश्वर कहे जाते हैं। उनका आदि और अंत न होने से वह अनंत भी हैं।

शिवरात्रि का मतलब है ऐसी रात जो हमें तीन तरह की परेशानियों से राहत दे। ये तीन परेशानियां हैं- आधिदैविक (प्राकृतिक समस्याएं), आधिभौतिक (शारीरिक कष्ट) और आध्यात्मिक (मन की चिंता)। रात्रि का अर्थ है विश्राम का समय। जब सब कुछ शांत हो जाता है, शरीर थकान के कारण सो जाता है और मन को सुकून मिलता है। इस तरह शिवरात्रि का मतलब है मन, बुद्धि और अहंकार को भगवान शिव की शांति में विश्राम देना। यह पर्व हमें अपने शरीर और मन को शांत करने, आत्मचिंतन करने और आंतरिक शांति पाने का अवसर देता है।

प्रस्तुति : सुभाष चन्द्र शर्मा

नभटाइम्स. नई दिल्ली. 110020 सर्वाधिकार सुरक्षित। विधिक जवाबदेही के लिए संपूर्ण व्यवस्था इसमें प्रकाशित सामग्री : प्रिंटलाइन (नवभारतटाइम्स) में दिए जानेवाले कंटेंट के लिए संपादक प्रकाशक हैं। प्रकाशक नवभारत टाइम्स, नई दिल्ली 110020 के प्रकाशन के लिए प्रकाशक **राजीव मिहरा** द्वारा, **टाइम्स ऑफ इंडिया प्रेस, गाजियाबाद** द्वारा मुद्रित। फोन नंबर 120 8, प्रेस्टा 54-55, इंडस्ट्रीयल एरिया, इंदिरापुरम नोएडा-201014, उत्तरप्रदेश में मुद्रित। फोन : 0120-2420001 फैक्स : 0120-2420017, वेबसाइट www.nbt.in
• एडवर्टाइजमेंट ऑफिस : मुंबई-400020। विज्ञापन संबंधी सूचना : 1 ए. डी. आई. भवन / नेताजी के मुख्य मुद्रण : सोलन्ज़ो की सर्विस : नेपाली 2 ए. : दीपांक : नेपाली 2 ए.
संपादक : दिनेश माथुर। : स्थानीय पोर्टी : इस अंक में प्रकाशित समाचार सामग्री के प्रकाशन एवं संपादन हेतु मैं स्वयं ही, एवं के उत्तरदायी हूं।

मुश्किल नहीं परीक्षा के प्रेशर को कम करना

श्रद्धा वशिष्ठ

परीक्षा का समय स्टूडेंट्स के लिए बेहद तनाव और चिंता का कारण बनता है। चाहे कॉलेज में एडमिशन के लिए एंट्रेंस एग्जाम हो, बोर्ड परीक्षाएं या फिर चौथी-पांचवीं के बच्चों के एग्जाम- मानसिक दबाव सभी पर होता है।

नुकसानदेह रवैया | भारतीय शिक्षा प्रणाली में स्टूडेंट्स के मनोबल को अनदेखा कर केवल परिणामों पर ध्यान केंद्रित किया जाता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 में यह स्पष्ट रूप से कहा गया है कि छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य को प्राथमिकता दी जानी चाहिए। परीक्षाओं में अत्यधिक दबाव और मानसिक तनाव को कम करने के लिए स्टूडेंट्स के समग्र विकास पर ध्यान केंद्रित करना जरूरी है।

व्यक्तित्व का निर्माण | रवींद्रनाथ टैगोर के मुताबिक, 'शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान प्राप्त करना नहीं, बल्कि व्यक्ति का मानसिक और आत्मिक विकास भी होना चाहिए।' शिक्षाविद डॉ. के. कस्तूरीरंगन ने NEP 2020 के संदर्भ में कहा था कि परीक्षाओं के दबाव को कम करने के लिए शिक्षा को लचीला और छात्रों की मानसिक स्थिति के अनुरूप बनाना अत्यंत आवश्यक है। इसी तरह से, प्रफेसर यशपाल का मानना था कि शिक्षा प्रणाली को विद्यार्थी-केंद्रित होना चाहिए, जहां केवल अकादमिक ज्ञान के बजाय मानसिक और भावनात्मक विकास पर भी ध्यान दिया जाए।

आत्मनिर्भरता का साधन | महात्मा गांधी ने कहा था कि सच्ची शिक्षा वह है जो मनुष्य को खुद तैयार करना और दूसरों के प्रति सहानुभूति रखना सिखाती है। स्वामी विवेकानंद ने भी शिक्षा को बाहरी ज्ञान से अधिक आत्मनिर्भरता का साधन माना है।

दबाव का असर | विभिन्न रिपोर्ट और आंकड़े बताते हैं कि परीक्षा के दबाव के कारण देश में हर साल सैकड़ों स्टूडेंट्स आत्महत्या कर लेते हैं। इन घटनाओं के पीछे एक बड़ा कारण यह भी है कि स्टूडेंट्स को मानसिक स्वास्थ्य सेवाओं का सही मार्गदर्शन नहीं मिल पाता। स्कूलों और कॉलेजों में मानसिक स्वास्थ्य पर जागरूकता की कमी और परीक्षा के दबाव के कारण स्टूडेंट्स अपनी समस्याओं का समाधान नहीं खोज पाते।

AI Image

कॉमन रूम

एग्जाम के दौरान मानसिक दबाव को कम करने के उपाय :

- स्टूडेंट्स को टाइम मैनेजमेंट और सही तरीके से तैयारी करने की कला सिखाई जानी चाहिए।
- स्कूल-कॉलेजों में मानसिक स्वास्थ्य के लिए काउंसिलिंग सेवाएं हों।
- NEP 2020 के तहत यह सुनिश्चित किया जा रहा है कि स्टूडेंट्स पर एग्जाम का प्रेशर कम आए।
- परिवार को समझना होगा कि परीक्षा के मुश्किल समय में बच्चों को उनकी जरूरत है, उनकी हिम्मत बढ़ाएं।

पूरी हो तैयारी | आज के तेजी से बदलते समाज में सफलता की परिभाषा महज अंक और परिणामों तक सीमित नहीं होनी चाहिए। यह याद रखा जाए कि शिक्षा का उद्देश्य केवल किताबों से ज्ञान प्राप्त करना नहीं है। स्टूडेंट्स के मानसिक, भावनात्मक और शारीरिक स्वास्थ्य का भी ध्यान रखना जरूरी है। समय आ गया है कि हम बच्चों को केवल परीक्षा की नहीं, जीवन की संपूर्ण तैयारी करने में मदद करें।

(लेखिका सबकी शिक्षा फाउंडेशन की फाउंडर हैं)

बिज़नेस स्टैंडर्ड
वर्ष 18 अंक 9

विकेंद्रीकरण की राह

पंचायती राज मंत्रालय और भारतीय लोक प्रशासन संस्थान ने हाल में जारी अपनी एक रिपोर्ट में विकेंद्रीकरण की दिशा में किए गए भारत के प्रयासों का व्यापक विश्लेषण किया है। सरकार ने संघीय ढांचे में विकेंद्रीकरण को बढ़ावा देने के लिए राज्य-स्तरीय अंतरण सूचकांक (डीआई) का जिक्र किया है। सूचकांक पंचायती राज संस्थानों को निर्देशित करने वाले संस्थागत ढांचे, ग्राम पंचायतों के कामकाज, उनकी वित्तीय व्यवस्था, स्थानीय स्तर पर क्षमता निर्माण और जवाबदेही जैसे महत्त्वपूर्ण पहलुओं की समीक्षा करता है। रिपोर्ट में राज्यों को साक्ष्य आधारित वरीयता क्रम में रखा गया है जिसमें प्रगति के साथ ही उन बिंदुओं का भी जिक्र किया गया है जिन पर और ध्यान देने की जरूरत है। ग्रामीण निकायों के लिए कुल अंतरण 2013-14 के 39.9 प्रतिशत से बढ़ाकर 2020-21 में 43.9 प्रतिशत कर दिया गया है। सभी संकेतकों के आधार पर देश के दक्षिणी राज्य, विशेषकर, कर्नाटक, केरल और तमिलनाडु दूसरे राज्यों से काफी आगे दिखाई देते हैं। कर्नाटक डीआई वैल्यू 72.23 के साथ शीर्ष स्थान पर है। अन्य राज्यों में महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश और तमिलनाडु ने भी बाजी मारी है। इस बीच, पिछले एक दशक में उत्तर प्रदेश और बिहार में काफी हद तक सुधार दिखे हैं मगर देश के राज्यों के बीच विषमता भी उतनी ही तेजी से बढ़ी है। मणिपुर, अरुणाचल प्रदेश, झारखंड और पंजाब में विकेंद्रीकरण के लिहाज से खराब स्थिति में हैं।

इस रिपोर्ट में अपर्याप्त वित्त, खासकर स्वयं अपने दम पर राजस्व अर्जित करने में ग्राम पंचायतों की दयनीय स्थिति, कमजोर बुनियादी ढांचा और मानव संसाधनों की कमी ग्राम पंचायतों के सामने बड़े चुनौती के रूप में उभरे हैं। ग्राम पंचायतों के उनके अपने राजस्व की राज्यों के राजस्व में हिस्सेदारी काफी कम रही है, जो वित्तीय स्वायत्तता में कमी का संकेत दे रहा है। देश के सभी राज्यों की बात करें तो केरल में ग्राम पंचायतों की राज्य के राजस्व में 2021-22 में सर्वाधिक हिस्सेदारी रही मगर 2.84 प्रतिशत के स्तर पर यह भी मामूली ही कही जा सकती है। वास्तविकता यह है कि वित्तीय बाधाओं के कारण पंचायती राज संस्थान अपनी पूर्ण क्षमता के साथ काम-काज नहीं कर पा रहे हैं क्योंकि वे वित्तीय मदद के लिए सरकार के ऊपरी स्तरों पर निर्भर हैं। कई राज्यों में समय पर राज्य वित्त आयोग का गठन नहीं होने से भी परिस्थिति बिगड़ी है। अब तक केवल 10 राज्यों ने छठे राज्य वित्त आयोग का गठन किया है। भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) ने पिछले साल पंचायती राज्य संस्थाओं पर एक अध्ययन किया था। इस अध्ययन में भी भारत में वित्तीय अधिकारों के अत्यधिक केंद्रीकरण का जिक्र किया गया था और इसमें राज्य सरकार भी कम जिम्मेदार नहीं ठहराए गए थे। इस अध्ययन में कहा गया कि पंचायती राज्य संस्थाओं का राजस्व व्यय सभी राज्यों के सकल राज्य घरेलू उत्पाद का 0.6 प्रतिशत से भी कम था। वित्तीय प्रबंधन के अलावा रिपोर्ट में ग्राम पंचायतों में सहायक कर्मचारियों की भारी कमी का भी जिक्र किया गया है। कुछ पूर्वोत्तर एवं पहाड़ी राज्य अपर्याप्त भौतिक एवं डिजिटल ढांचे की कमी से जूझ रहे हैं। महिलाओं की सहभागिता के लिहाज से कुछ राज्य एवं केंद्र शासित प्रदेश जैसे पंजाब, मध्य प्रदेश, कर्नाटक और जम्मू कश्मीर अब भी निर्धारित मानक का पालन नहीं कर पा रहे हैं। इसके विपरीत झारखंड, तमिलनाडु और छत्तीसगढ़ जैसे राज्यों में महिलाओं के लिए आरक्षित सीट निर्धारित कोटा से कहीं अधिक है। स्विट्जरलैंड और स्कैंडिनेवियाई देशों (स्वीडन, नॉर्वे और डेनमार्क) के उदाहरण हमें बताते हैं कि सरकार एवं लोक वित्त के विकेंद्रीकरण के कैसे बेहतर परिणाम हासिल किए जा सकते हैं। बेशक, पिछले कुछ वर्षों में पंचायती राज संस्थाओं की स्थिति में सुधार हुआ है किंतु वित्तीय संसाधन जुटाने और प्रशासनिक क्षमता विकसित करने के लिहाज से उन्हें इसमें और सुधार करना होगा। इस संदर्भ में रिपोर्ट में ऐसे सुझाव दिए गए हैं जो नीतिगत चर्चा को समृद्ध करते हैं। इनमें आरक्षण की रोटेशन प्रणाली पर प्रत्येक चुनाव के बजाय दो से तीन कार्यकालों में एक बार विचार करने की जरूरत, लोक सभा और विधान सभा क्षेत्रों, नगर निगम और ग्राम पंचायतों के लिए समान मतदाता सूची, राज्य वित्त आयोग का समय पर गठन आदि शामिल हैं। इनके अलावा, सभी प्रकार की आवासीय एवं अन्य संपत्ति पर जायदाद कर वसूलने के लिए ग्राम पंचायतों को अधिकार देने, सहायक कर्मचारियों की नियमित भर्ती एवं उनका प्रशिक्षण और जवाबदेही सुनिश्चित करने के लिए स्थानीय सरकार लोकपाल की स्थापना करने का भी जिक्र किया गया है।

कारगर बनें बजट के सुधार उपाय

वित्त मंत्री ने बजट में कुछ रोचक नियामकीय सुधारों की घोषणा की है किंतु इनके क्रियान्वयन से पहले इन्हें अच्छी तरह समझना जरूरी है। बता रहे हैं के पी कृष्णन

पिछले लगभग एक दशक से भारत में नियम-कायदों से जुड़े झमेले और झंझट बहुत बढ़ गए हैं। वित्त वर्ष 2025-26 के बजट में वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने इन्हें दूर करने के लिए कुछ दिलचस्प उपायों की घोषणा की। वित्तीय क्षेत्र के लिए वित्तीय स्थायित्व एवं विकास परिषद (एफएसडीसी) के अंतर्गत एक प्रक्रिया शुरू करने का प्रस्ताव है, जिससे पता चलेगा कि वर्तमान वित्तीय नियमों एवं निर्देशों का कैसा असर पड़ रहा है। साथ ही उन नियमों का असर बढ़ाने तथा वित्तीय क्षेत्र के विकास में सहारा देने के लिए ढांचा भी तैयार किया जाएगा।

सरकार तौर-तरीके बदलवाने के लिए नियम-कायदे बनाती है। कायदे में इनका मकसद बाजार विफलता से निपटना होना चाहिए और इन्हें केंद्रीय नियोजन में नहीं होना चाहिए। भारत में नियामकों को वित्तीय क्षेत्र में सर्वाधिक अधिकार दिए गए हैं और आज भी वही सोच हावी है, जिसके तहत कई दशक पहले भारतीय रिजर्व बैंक तथा भारतीय प्रतिभूति एवं विनिमय बोर्ड (सेबी) की स्थापना की गई थी। मगर अब लगभग सभी महसूस करने लगे हैं कि भारत में वित्तीय नियमन केंद्रीय नियोजन की तरफ बढ़ रहा है, जिससे उचित कानून एवं दिशानिर्देश ठीक से काम नहीं पा रहे।

नियामकीय सिद्धांत में ये कठिनाइयां भी दिखी हैं और यह भी बताया गया है कि उन्हें दूर करने के लिए नियामकीय संगठनों का ढांचा बेहतर कैसे बनाया जा सकता है। नीति निर्धारक समाधान पाने के लिए इन समस्याओं और संभावित नीतिगत मार्गों पर विचार कर रहे हैं।

बजट में घोषित नीतिगत उपाय के मुताबिक वित्तीय क्षेत्र के नियमन और अन्य पहलुओं का प्रभाव आंकने का जिम्मा एफएसडीसी को दिया गया है। पहली नजर में यह काफी रोचक लग रहा है क्योंकि हजारों कर्मचारियों वाले हमारे वित्तीय नियामक उसी विवेकाधिकार के साथ काम करते रहेंगे मगर एक बाहरी संगठन उनका कामकाज सुधारने की कोशिश करेगा।

इसे कारगर बनाना है तो कर्मचारियों की क्षमता तथा अधिकार के सवालों पर विचार करना होगा। वित्तीय नियामक लगभग रोजाना 10 पृष्ठ के नियम तैयार कर देते हैं और साल भर में हजारों पृष्ठों के कायदे लिख दिए जाते हैं। इन्हें पढ़ने और समझने के लिए भी मजबूत दिमाग की जरूरत होती है। नियामकों से ऊपर उठकर सोचना, नियमों को नियामकीय सिद्धांतों के नजरिये से देखना तो और भी मुश्किल काम है।

इसके बाद अधिकार का सवाल आ जाता है। नियामक ईर्ष्या के साथ अपने अधिकार क्षेत्र पर अड़े रहते हैं और असानी से पीछे नहीं हटते चाहे नियमों की आलोचना हो या उनसे नुकसान होता हुआ ही क्यों न दिख रहा हो।

तो क्या एफएसडीसी इन बड़े नियामकों की जमीन हिला सकता है? एफएसडी में पांच लोगों का सचिवालय है। विभिन्न नियामकों के प्रमुखों को बैठकों में लाने के लिए इसने संयोजक की भूमिका निभाई है। इन बैठकों के बाद प्रेस विज्ञप्तियां जारी होती हैं। इन विज्ञप्तियों की पड़ताल बताती है कि एफएसडीसी ने आज तक कोई बड़ा काम नहीं किया है। ऐसे में लगता नहीं कि एफएसडीसी इस चुनौती से निपट पाएगा।

वित्त मंत्रालय इस स्थिति का किस तरह बेहतर इस्तेमाल कर सकता है? हमें समझना होगा कि एफएसडीसी नियामकों के हजारों कर्मचारियों को नियंत्रित नहीं कर सकता है। हां, वह नियामकों के तौर-तरीकों को नियामकीय सिद्धांतों के जरिये सुधारकर समस्या को जड़ से खत्म करने में बड़ी भूमिका निभा सकता है। नियम तैयार करने के हरेक चरण में चर्चा होनी चाहिए और जरूरत पड़ने पर आलोचना भी होनी चाहिए ताकि बेहतर व्यवस्था अपनाई जा सके।

उदाहरण के लिए सेबी ने हाल ही में नियम बनाने का कायदा जारी किया है। कुछ मायनों में यह अहम कदम है। इसकी हिमायत सुधारवादी वर्ष 2013 से ही कर रहे हैं और अब यह आ ही गया है। मगर इसकी भी कुछ सीमा हैं। इसमें सेबी के भीतर ही एक अलग व्यवस्था होनी है, जो सेबी की मुख्य इकाई द्वारा तैयार दिशानिर्देशों की समीक्षा करेगी। मगर जरूरत इस बात की है कि मुख्य इकाई ही अलग ढंग से काम करे।

वित्तीय क्षेत्र से बाहर नियमन की बात करते हुए वित्त मंत्री ने कहा कि सरकार पुराने कानूनों के तहत बने नियम-कायदों में सुधार करेगी। इस आधुनिक, लचीले, जन हितैषी और विश्वास आधारित समकालीन नियामकीय व्यवस्था तैयार करने के लिए वित्त मंत्री ने कुछ खास उपायों के प्रस्ताव दिए, जिनमें नियामकीय सुधार के लिए उच्च स्तरीय समिति का गठन भी शामिल है। यह समिति वित्त के अलावा बाकी सभी क्षेत्रों के नियमनों, प्रमाणपत्रों, लाइसेंसों और मंजूरियों की समीक्षा करेगी तथा एक साल के भीतर सुझाव देगी।

पहला सवाल है कि 'वित्तीय क्षेत्र से बाहर के दिशानिर्देशों' का अर्थ क्या है? क्या इसकी परिभाषा में कंपनी कानून, भारतीय प्रतिस्पर्द्धा कानून अधिनियम, भारतीय खाद्य सुरक्षा एवं मानक प्राधिकरण अधिनियम और औषधि एवं सौंदर्य प्रसाधन अधिनियम के अंतर्गत बने नियम-कानून भी आएंगे? केंद्र के विभिन्न श्रम कानूनों के तहत बने नियमों का क्या होगा? कुछ अन्य कानून भी हैं जो अकाउंटेंट, ऑडिटर और अन्य पेशे तथा शिक्षा क्षेत्र का नियमन करते हैं। उदाहरण के लिए दवा कानून दवाओं के खुदरा कारोबार और कुछ हद तक दवा विनिर्माण से भी जुड़ा है। इसके साथ यह दवा बनाने एवं बेचने वालों (फार्मासिस्ट) के पेशे का भी नियमन करता है।

यहां भी वैसी ही दिक्कत आती है। एफएसडीसी कम से कम स्थायी इकाई है मगर नियामकीय सुधार के लिए उच्च स्तरीय समिति की तो शुरुआत ही होगी। मान लें कि यह लगभग 20 लोगों की तकनीकी टीम खड़ी कर सकती है तो भी इसे 20,000 लोगों से निपटना होगा, जो लगातार नियम बनाए जा रहे हैं। इन नियमों को समझने के लिए उस क्षेत्र की बारीक जानकारी भी होनी चाहिए। अगर प्रस्तावित समिति के पास अच्छा दस्तावेज लिखने वाले बुद्धिजीवी आ जाते हैं तो भी अधिकार का सवाल खड़ा हो जाएगा। सरकार का हरेक पुर्जा दमनकारी ताकत से अपनी अहमियत साबित करता है और इस ताकत को बचाए रखने के लिए वह पीछे हटने को राजी नहीं होगा।

हम श्रेष्ठ परिणाम हासिल करने के लिए इस स्थिति का इस्तेमाल किस तरह कर सकते हैं? इसके लिए सही तरीका तो यही है कि बारीकियों में नहीं पड़ा जाए। प्रस्तावित समिति के सब कुछ अच्छी तरह समझ पाना और उसकी व्याख्या करना असंभव ही होगा। उदाहरण के लिए हवाई अड्डे से जुड़े नियम-कायदों का माहिर बनने के लिए एक साल काफी नहीं है। भारत की वित्तीय यात्रा से हमने यही समझा है कि कोई टीम किसी एक क्षेत्र को पूरी तरह समझने में कम से कम 25 वर्ष ले जाती है।

दूसरा तरीका यह है कि समिति भारतीय नियामकीय सिद्धांत के मौजूदा ज्ञान का इस्तेमाल करने के लिए एक या दो गैर-वित्तीय नियामकीय संगठनों (शायद भारतीय दूरसंचार नियामक प्राधिकरण और भारतीय विमानपत्तन आर्थिक नियामकीय प्राधिकरण) पर ध्यान केंद्रित कर सकती है। उसके बाद यह इन संगठनों के कामकाज में सुधार के उपाय सुझा सकती है।

(लेखक भारतीय प्रशासनिक सेवा के अधिकारी रह चुके हैं और आइजक सेंटर फॉर पब्लिक पॉलिसी में मानद वरिष्ठ फेलो हैं)

हाई-स्पीड रेल तकनीक पर तेजी से बढ़ें

जब 1 मार्च, 1969 को देश की पहली राजधानी ट्रेन दिल्ली से हावड़ा के लिए रवाना हुई तो एक तरह से भारतीय रेल का नया सफर शुरू हो गया। दिल्ली से शाम साढ़े पांच बजे रवाना हुई इस राजधानी ट्रेन ने हावड़ा तक का सफर केवल 17 घंटे में पूरा कर लिया, जिसमें उससे पहले 24 घंटे से भी ज्यादा का वक्त लग जाता था। उस समय इस ट्रेन में वातानुकूलित (एसी) प्रथम श्रेणी का किराया 280 रुपये और एसी चेयर कार का 90 रुपये था। चमचमाते लाल और सफेद डिब्बों वाली यह रेलगाड़ी पूरी तरह वातानुकूलित थी, जिसमें यात्रियों को बढ़िया और स्वादिष्ट व्यंजन परोसे गए थे। पटरियों पर 120 किलोमीटर प्रति घंटा की रफ्तार से दौड़ती यह ट्रेन उत्तर प्रदेश और बिहार के कई प्रमुख स्टेशनों को धड़धड़ाते हुए पार कर गई और बिना रुके हावड़ा पहुंच गई। यह सोचकर हंसी आती है कि उस समय कई अखबारों के संपादकीय में इसे अमीरों की रेलगाड़ी बताया गया था और कहा गया था कि भारत जैसे गरीब देश में इस रेलगाड़ी से सफर करना लोगों के वश की बात नहीं होगी।

मगर अब एकदम साफ हो गया है कि भारतीय रेल को नई रफ्तार और सोच के साथ आगे बढ़ना है तो उसे हाई-स्पीड रेल तकनीक अपनानी होगी। हमें एक बार फिर ध्यान रखना होगा कि तकनीकी विकास की तेज चाल को अमीरों का शगल न मान लिया जाए। हाई-स्पीड रेल भारतीय रेल की यात्री नेटवर्क में उस समय दाखिल होने जा रही है, जब एक साथ चार बड़ी बातें नजर आ रही हैं।

पहली बात, भारतीय रेल स्वयं कायाकल्प के दौर से गुजर रही है। रेल तंत्र का विस्तार, समर्पित माल गलियारे, लगभग पूरी हो रही बुलेट ट्रेन परियोजना, वंदे भारत ट्रेनों की बढ़ती संख्या और प्रकार, दिल्ली-मेरठ जैसे रीजनल रैपिड ट्रांसपोर्ट सिस्टम, स्टेशनों का पुनर्विकास और आधुनिक 'कवच' सुरक्षा प्रणाली भारतीय रेल को एक नई पहचान देने जा रहे हैं। हाई-स्पीड रेल को इसका अभिन्न हिस्सा होना चाहिए।

दूसरी बात भारतीय रेल रोजाना 13,000 गाड़ियां चलाती है, जिन पर 2.4 करोड़ लोग सफर करते हैं। यह संख्या ऑस्ट्रेलिया की आबादी से केवल 20 लाख कम है। इन यात्रियों में 1 करोड़ बड़े शहरों तक और लंबी दूरी की यात्रा करते हैं, जिनमें 5 लाख लोग (5 प्रतिशत) एसी डिब्बों में सफर करते हैं। यह रेल को अच्छी कमाई कराने वाली श्रेणी है, जो फिफायती हवाई यात्रा और इंटरसिटी लक्जरी बसों के पास जाने का खतरा बढ़ता जा रहा है।

बुनियादी ढांचा
विनायक चटर्जी

तीसरी बात, भारत के आर्थिक संकेतक जता रहे हैं कि देश रेल तकनीक के मामले में कायाकल्प के लिए पूरी तरह तैयार है। भारत का प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) क्रय शक्ति समता के आधार पर दूसरे देशों के उस समय के जीडीपी के बराबर हो गया है, जिस समय उन देशों ने हाई-स्पीड रेल शुरू कर दी थी और यह दशकों पहले हुआ था। इससे संकेत मिलता है कि यह भारत के लिए पारंपरिक रेल को छोड़कर हाई-स्पीड रेल की तरह कदम बढ़ाने का एकदम सही वक्त है।

चौथी बात, गुजरात के वडोदरा में हाई-स्पीड रेल प्रशिक्षण केंद्र तैयार हो रहा है, जहां किसी भी समय 4,000 लोगों को प्रशिक्षित करने के लिए उच्च गुणवत्ता वाली सेवाएं होंगी। हाई-स्पीड रेल के लिए क्षमता निर्माण का काम भी चल रहा है।

इन सभी बातों को ध्यान में रखते हुए हाई-स्पीड रेल कई मायनों में ऐसी जरूरत बन गई है, जिसे टाला नहीं जा सकता। इसका कारण भारतीय रेल नेटवर्क है, जो इतना बड़ा और पेचीदा है कि मौजूदा ढांचे को यात्रियों की बढ़ती भीड़ के हिसाब से उन्नत करने में कई दशक लग जाएंगे। इंटरनैशनल यूनियन ऑफ रेलवेज के अनुसार मौजूदा रेल पटरियों को 200 से 220 किमी प्रति घंटा अधिकतम रफ्तार के लायक बना दिया जाए तो उसे हाई-स्पीड रेल माना जाएगा। इसके लिए बिछने वाली नई पटरी पर 250 किमी प्रति घंटा या अधिक रफ्तार से गाड़ी दौड़ जानी चाहिए। इस परिभाषा के हिसाब से भारत के लिए रेल नेटवर्क को आधुनिक बनाना और हाई-स्पीड रेल पर जोर देना आसान हो जाता है। दिलचस्प है कि अहमदाबाद-मुंबई बुलेट ट्रेन की रफ्तार 320 किमी प्रति घंटा तक हो सकती है, जो जापान की शिंकासेन के बराबर होगी। चीन में शांघाई मागलेव 431 किमी प्रति घंटा तक रफ्तार हासिल कर लेती है।

हाई-स्पीड रेल से कई फायदे हो सकते हैं। एसी 1 और एसी 2 के यात्रियों को इसमें भेज दिया जाए तो शयनयान और द्वितीय श्रेणी के लिए सीटें बढ़ सकती हैं। अलग लाइन होने के कारण यह भारतीय रेल के नेटवर्क पर मौजूद भीड़ को कुछ हल्का कर देगी। इससे शहरी क्षेत्रों में लोगों का जमाव भी कम होगा, जिससे वहां आबादी का बोझ घटेगा। हाई-स्पीड रेल का हरेक किलोमीटर पारंपरिक पटरी के मुकाबले पांच गुना क्षमता मुहैया कराता है, इसलिए मझोले और छोटे शहरों के विकास में यह अहम भूमिका निभा सकती है।

रेल विशेषज्ञ मानते हैं कि हाई-स्पीड रेल पेचीदा प्रणाली है, जिसमें डिब्बों, पटरी के डिजाइन, सिग्नल प्रणाली, केंद्रीकृत नियंत्रण, सुरक्षा और परिचालन एवं रखरखाव प्रणाली समेत विभिन्न तकनीकों को अचूक तरीके से एक साथ लाना होता है। भारत ने देश के भीतर ट्रेन बनाकर दिखा दी है मगर कई उपकरण और प्रणालियां अब भी विदेश से मंगानी पड़ती हैं। देश में विकसित हाई-स्पीड रेल तकनीक का आत्मनिर्भर भारत की सोच के साथ इस्तेमाल इस यात्रा में अहम पहलू होगा।

तकनीक केंद्रित नई संस्था बनाने का सुझाव दिया जा रहा है, जिसे नैशनल एचएसआर टेक्नोलॉजी कॉरपोरेशन कहा जा सकता है।

कई एचएसआर गलियारे तैयार करने की योजना है और नैशनल हाई-स्पीड रेल कॉरपोरेशन सात या ज्यादा की विस्तृत परियोजना रिपोर्ट जांच रहा है। देश में ही बुलेट ट्रेन तैयार करने की भी योजना है और चेन्नई में इंटीग्रल कोच फैक्टरी ज्यादा रफ्तार वाली वंदे भारत ट्रेन के नमूने तैयार कर रहा है। भारतीय रेल ने बीईएमएल को दो तेज रफ्तार ट्रेन बनाने के लिए 867 करोड़ रुपये का ठेका दिया है। इनकी रफ्तार 280 किमी प्रति घंटा तक होगी। हाई-स्पीड रेल गलियारों का चयन विकास अर्थशास्त्र की ठोस समझ पर आधारित होना चाहिए, जिसमें सोचना चाहिए कि रोजाना कितने यात्री चढ़ेंगे, किस कीमत तक का टिकट खरीद सकेंगे, किस-किस इलाके में इसे होना चाहिए और दूरी तथा पूंजीगत व्यय आदि पर भी विचार होना चाहिए।

इन्फ्राविजन फाउंडेशन ने इन पहलुओं का गहराई से अध्ययन किया है और पाया है कि 2035 तक इन गलियारों का विकास किया जा सकता है:

गलियारा 1: दिल्ली-रेवाड़ी-जयपुर-अजमेर-जोधपुर-अहमदाबाद-मुंबई

गलियारा 2: चेन्नई-मुंबई (तिरुपति होकर), बेंगलूरु, तुमकुरु, दावणगेरे, धारवाड़, बेलगाम, कोल्हापुर, सातारा, पुणे, नवी मुंबई और गोवा तक विस्तार

गलियारा 3: दिल्ली-सोनीपत-पानीपत-करनाल-अंबाला-चंडीगढ़-लुधियाना-जालंधर-अमृतसर

गलियारा 4: दिल्ली-आगरा-लखनऊ-वाराणसी-पटना-कोलकाता

जापान, इटली और स्पेन जैसे हरेक देश ने हाई-स्पीड रेल के विकास की अपनी अलग योजना बनाई है और सफल भी रहे हैं। इससे पता चलता है कि सभी के लिए एक ही ढांचा काम नहीं करता। भारत को अपना रास्ता खुद गढ़ना होगा। इसलिए हाई-स्पीड रेल पर तेजी से काम किया जाए।

(लेखक बुनियादी ढांचे के विशेषज्ञ हैं और इन्फ्राविजन फाउंडेशन के संस्थापक तथा प्रबंध न्यासी हैं)

आपका पक्ष

यूक्रेन युद्ध के तीन साल, अब शांति की नई उम्मीद

यूक्रेन में जारी युद्ध तीसरे वर्ष में प्रवेश कर चुका है, लेकिन हाल की कूटनीतिक पहल वैश्विक शांति की नई उम्मीद जगा रही हैं। अमेरिका, यूरोपीय संघ और अन्य प्रमुख देशों ने कीव पहुंच कर शांति वार्ता को गति देने के प्रयास तेज किए हैं। यूरोपीय आयोग की अध्यक्ष उर्सुला वॉन डेर लेयेन और आईएमएफ प्रमुख क्रिस्टालिना जॉर्जीवा ने यूक्रेन को आर्थिक सहायता देने की घोषणा की है, जिससे वैश्विक स्तर पर शांति प्रयासों को मजबूती मिली है। संयुक्त राष्ट्र ने रूस से तत्काल सेना हटाने का प्रस्ताव रखा है, जो बातचीत को निर्णायक मोड़ दे सकता है। चीन के राष्ट्रपति शी चिनफिंग ने भी कूटनीतिक समाधान का समर्थन किया है, जिससे शांति वार्ता को और बल मिल सकता है। इस परिप्रेक्ष्य में भारत की भूमिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण हो जाती है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पहले ही स्पष्ट किया है कि यह युद्ध का युग नहीं है और भारत लगातार शांतिपूर्ण समाधान की वकालत कर रहा है। भारत ने यूक्रेन को मानवीय सहायता दी है और रूस के साथ संवाद बनाए रखते हुए संतुलित कूटनीति अपनाई है। स्पष्ट है कि विश्व अब युद्ध की विभीषिका से बाहर निकलकर स्थायी शांति की दिशा में आगे बढ़ना चाहता है। अगर ये प्रयास सफल होते हैं, तो यह न केवल यूक्रेन बल्कि संपूर्ण विश्व के लिए एक ऐतिहासिक उपलब्धि होगी, जिसमें भारत की संतुलित कूटनीति निर्णायक भूमिका निभा सकती है।

प्रो. आरके जैन, बड़वानी

यूक्रेन पर रूस के आक्रमण के तीन साल होने पर मंगलवार को लंदन के ट्रैफलगर स्क्वायर में लोग एकत्र हुए

साइबर अपराधियों के खिलाफ हो कार्रवाई

पिछले दिनों म्यांमार के साइबर अड्डे से 70 भारतीयों को छुड़ाया गया है, जिन्हें बंधक बनाकर ऑनलाइन साइबर अपराध को अंजाम दिया जा रहा था। यह पहली बार नहीं है इससे पहले भी कुछ लोगों को छुड़ाया गया है। लेकिन जब तक अपराधियों के गठजोड़ और गिरोह को पूरी तरह नष्ट नहीं किया जाता, तब तक यह गोरखधंधा चलता ही रहेगा। अनुमान है कि अभी भी कई लोगों इनके जाल में फंसे हुए हैं। सरकार को म्यांमार सरकार से बात करके इस गिरोह का खत्म कराना होगा और सभी भारतीयों को सुरक्षित देश में लाना होगा। साथ ही यह भी ध्यान रखना होगा कि कहीं यह भारत में आकर भी खुद का साइबर गिरोह न बना ले। साइबर अपराध का यह जाल बहुत ही खतरनाक है और इसके लिए हमें बहुत ही सावधान रहना होगा। हमें अपने डेटा की सुरक्षा के लिए बहुत ही सावधानी से काम लेना होगा और हमें अपने ऑनलाइन लेनदेन के लिए बहुत ही सावधानी बरतनी होगी। इसके अलावा हमें अपने बच्चों को भी साइबर अपराध के बारे में जागरूक करना होगा और उन्हें ऑनलाइन सुरक्षा के बारे में जानकारी देनी होगी। हमें अपने समाज में भी साइबर अपराध के बारे में जागरूकता फैलानी होगी और लोगों को इसके बारे में जानकारी देनी होगी। सरकार को भी साइबर अपराध के खिलाफ कार्रवाई करनी होगी तथा अपराधियों को सजा दिलानी होगी। सरकार को साइबर अपराध के लिए एक विशेष कानून तथा अपराधियों को सजा दिलाने के लिए एक विशेष अदालत बनानी चाहिए।

विभूति बुपक्या, खाचरोद

पाठक अपनी राय हमें इस पते पर भेज सकते हैं : संपादक, बिज़नेस स्टैंडर्ड, 4, बहादुर शाह जफर मार्ग, नई दिल्ली 110002. आप हमें ईमेल भी कर सकते हैं : lettershindi@bsmail.in
पत्र/ईमेल में अपना डाक पता और टेलीफोन नंबर अवश्य लिखें।

देश-दुनिया

फोटो - पीटीआई

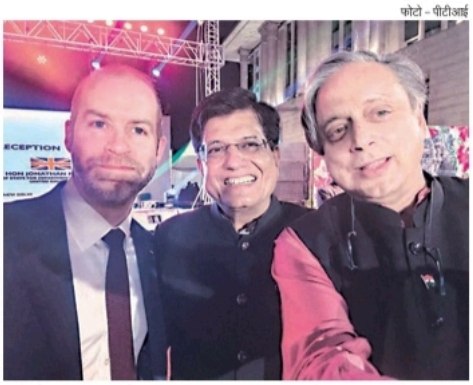

कांग्रेस के वरिष्ठ नेता शशि थरूर (दाएं) ने मंगलवार को केंद्रीय वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री पीयूष गोयल तथा ब्रिटेन के व्यापार मंत्री जोनाथन रेनॉल्ड्स (बाएं) के साथ एक सेल्फी पोस्ट की तथा कहा कि लंबे समय से रुकी हुई भारत-ब्रिटेन मुक्त व्यापार समझौता (एफटीए) वार्ता की बहाली स्वागत योग्य है।

www.readwhere.com

कल्पमेधा

सत्य स्पष्ट रहे, चाहे तुम उस पर चल सको या न चल सको, प्रयास करोगे, तो उस पर दिन-ब-दिन अधिकाधिक चल सकोगे।

- जान रस्किन

साझेदारी का सफर

भारत और ब्रिटेन के बीच एक बार फिर मुक्त व्यापार समझौते को लेकर बातचीत का सिलसिला शुरू होने जा रहा है। ब्रिटेन इसे लेकर उत्साहित है और उसे उम्मीद है कि अगले दस वर्षों में दोनों देशों के बीच व्यापार दो से तीन गुना तक बढ़ सकता है। इस बातचीत के किसी सार्थक नतीजे पर पहुंचने की उम्मीद इसलिए भी जताई जा रही है कि अमेरिका अपनी शुल्क नीति को लेकर आक्रामक रुख अपनाए हुए है। ट्रंप प्रशासन ने घोषणा कर रखी है कि जो हम पर जितना शुल्क लगाएगा, हम भी उस पर उतना ही शुल्क लगाएंगे। इससे कई देशों के सामने व्यापार में घाटे का संकट पैदा हो गया है। हालांकि चीन ने इसका विरोध करते हुए कहा था कि वह इस मसले को विश्व व्यापार संगठन में उठाएगा, क्योंकि अमेरिका की शुल्क नीति विश्व व्यापार नियमों के विरुद्ध है। पर अमेरिका के रुख में कोई नरमी नजर नहीं आ रही। ऐसे में कई देश वैकल्पिक बाजार की तलाश में हैं। भारत को भी विकल्पों की तलाश है। ऐसे में, उन्हीं देशों के साथ व्यापार बढ़ाने का प्रयास सफल हो सकता है, जिनके साथ पहले से व्यापारिक संबंध मजबूत हैं।

ब्रिटेन के साथ भारत के व्यापारिक संबंध बहुत पुराने और मजबूत हैं। फिलहाल दोनों देशों के बीच करीब बीस अरब डालर का व्यापार होता है। दोनों इसे कम से कम दो गुना तक बढ़ाना चाहते हैं। इस संबंध में मुक्त व्यापार समझौते को लेकर पिछले चार वर्षों से बातचीत चल रही है। अब तक दस दौर की बात हो भी चुकी है। आम चुनाव के चलते यह सिलसिला रुक गया था। ब्रिटिश व्यापार सचिव की भारत यात्रा के बाद उसके फिर से शुरू होने पर सहमति बनी है। मुक्त व्यापार समझौते से स्वाभाविक रूप से दोनों के बीच व्यापार बढ़ेगा। उसके बाद दोनों देश एक-दूसरे के उत्पाद पर नाममात्र का शुल्क लगाएंगे। फिर, भारत और ब्रिटेन इस वक्त अपने विनिर्माण क्षेत्र में आई सुस्ती से पार पाने के उपाय तलाश रहे हैं। वह व्यापार में बढ़ोतरी से ही संभव हो सकता है। भारत का निर्यात लक्ष्य से काफी नीचे चल रहा है, जबकि आयात बढ़ रहा है। इस तरह चीन आदि कई देशों के साथ व्यापार घाटा काफी बढ़ गया है। लिहाजा, भारत की भी कोशिश है कि ब्रिटेन के साथ व्यापार को गति मिले, ताकि इस संकट से पार पाने में मदद मिले।

अगर ब्रिटेन के साथ भारत का मुक्त व्यापार समझौता होता है, तो भारत से चमड़ा, कपड़ा, जेवर, सूचना तकनीक, दवा और कृषि आदि उत्पाद का ब्रिटेन में निर्यात को बढ़ावा मिलेगा। ब्रिटेन अपने उन्नत विनिर्माण, स्वच्छ ऊर्जा और व्यापार सेवाएं भारत में बेचना चाहता है। जाहिर है, जिन चीजों पर अधिक शुल्क लगने की वजह से अमेरिका में भारत के लिए बाजार सिकुड़ने की आशंका जताई जा रही है, उनकी ब्रिटेन में पहुंच आसान हो जाएगी। मगर फिलहाल अड़चन भारतीय नागरिकों की ब्रिटेन में आवाजाही, कारोबार आदि के लिए वीजा शर्तों को आसान बनाने को लेकर आ रही है। ब्रिटेन में सत्ता परिवर्तन के बाद बाहरी लोगों के लिए नियम और शर्तें कठोर कर दी गई हैं। इससे ब्रिटेन में रह रहे भारतीय मूल के नागरिकों के सामने कई मुश्किलें खड़ी हो गई हैं। वहां जाने वाले विद्यार्थियों आदि के लिए जगहें कम पड़ गई हैं। ऐसे में मुक्त व्यापार समझौते को लेकर बातचीत की कामयाबी फिलहाल ब्रिटेन के रुख पर निर्भर है।

अनियमितता की परतें

दिल्ली में आम आदमी पार्टी सरकार के दौरान शराब नीति को लेकर उठा विवाद अब सरकार बदलने के साथ फिर से जोर पकड़ता दिखने लगा है। हाल में इस बात पर विवाद ने तूल पकड़ लिया था कि अगर शराब नीति के मसले पर नियंत्रक महालेखा परीक्षक यानी कैग ने अपनी रपट दी है, तो उसे विधानसभा के पटल पर रखने में आप सरकार को क्या और क्यों दिक्कत थी। अब नई सरकार ने अपने गठन के कुछ ही दिनों बाद कैग की रपट को विधानसभा के पटल पर रख दिया है। सवाल है कि जो आम आदमी पार्टी भ्रष्टाचार के खिलाफ आंदोलन की जमीन पर बनी और फिर सत्ता में आई थी, उसने इस मसले पर इतनी पर्दादारी कैसे और क्यों की। गौरतलब है कि दिल्ली विधानसभा के मौजूदा सत्र के दूसरे दिन मंगलवार को सदन में शराब नीति पर कैग की रपट पेश की गई, जिसमें कहा गया है कि नई शराब नीति से दिल्ली सरकार को दो हजार दो करोड़ रुपए का घाटा हुआ। रपट के मुताबिक, नीति कमजोर थी और लाइसेंस प्रक्रिया में भी गड़बड़ी हुई। इस संदर्भ में विशेषज्ञ समिति ने नीति में कुछ बदलाव के सुझाव दिए थे, लेकिन तत्कालीन उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया ने उसे नजरअंदाज कर दिया था।

दरअसल, पिछली सरकार पर इस रपट को रोके रखने, सदन में पेश न करने और इस तरह संविधान का खुलेआम उल्लंघन करने के आरोप लगे थे। इस मसले पर उपराज्यपाल और तत्कालीन आप सरकार के बीच काफी टकराव की स्थिति भी बनी थी। तब भी मुख्य सवाल यही उठा था कि अगर आम आदमी पार्टी की सरकार शराब घोटाले में अपने ऊपर लगे आरोपों और इससे संबंधित नीतियों में अनियमितता को गलत बता रही थी, तो उसे कैग की रपट को विधानसभा के पटल पर रखने में हिचक क्यों हो रही थी। अब कैग की रपट पेश होने के बाद जो तथ्य प्रकाश में आए हैं, उस पर स्वाभाविक ही एक बार फिर दिल्ली में आप और भाजपा के बीच राजनीतिक टकराव की स्थिति बनती दिख रही है। हालांकि जरूरत इस बात की है कि बिना किसी राजनीतिक पूर्वाग्रह के इस मसले पर जनता के सामने पूरी वस्तुस्थिति पारदर्शिता के साथ रखी जाए।

तपती धरती बढ़ती परेशानियां

संयुक्त राष्ट्र ने इस बात की पुष्टि की है कि जीवाश्म ईंधन के प्रयोग से निकलने वाली गैसों से पृथ्वी के तापमान में वृद्धि हो रही है। वर्ष 1970 के दशक में वैज्ञानिकों ने पर्याप्त साक्ष्यों के आधार पर बताया कि वैश्विक ताप की वजह से पृथ्वी की सतह का तापमान लगातार बढ़ रहा है।

मोहन सिंह

हमारे सौरमंडल में पृथ्वी ही एक ऐसा ग्रह है, जहां जीवन के लिए सभी अनुकूल परिस्थितियां मौजूद हैं। पृथ्वी पर तापमान की अनुकूलता, वायु और जल की उपलब्धता तथा जीवन के लिए जरूरी पोषक तत्वों की मौजूदगी ने हमारे जीवन को सुखद बनाया है। इन वजहों से पृथ्वी पर मानव जीवन की हर तरह की गतिविधि संभव हुई है। वर्ष 1800 के आसपास वैज्ञानिकों को लगने लगा कि जीवाश्म ईंधन को ऊर्जा स्रोत के रूप में इस्तेमाल करने की वजह से जलवायु में परिवर्तन हो रहा है। सत्रहवीं सदी के शुरू में यूरोप में वाष्प इंजन के आविष्कार के बाद औद्योगीकरण की गति तेज हुई। मशीनों के चूते बड़े पैमाने पर उत्पादन होने लगा। इन उत्पादों की खपत और और कच्चे माल की आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए पूरी दुनिया में नए बाजार की तलाश शुरू हुई। कारखानों में ऊर्जा की जरूरतों को पूरा करने के लिए बड़े पैमाने पर जीवाश्म ईंधन और खनिज पदार्थों का प्रयोग किया जाने लगा। पर्यावरण नुकसान की कीमत पर प्रकृति का बेरहमी से शोषण उस वक्त से शुरू हुआ।

संयुक्त राष्ट्र ने भी इस बात की पुष्टि की है कि जीवाश्म ईंधन के प्रयोग से निकलने वाली गैसों से पृथ्वी के तापमान में वृद्धि हो रही है। वर्ष 1970 के दशक में वैज्ञानिकों ने पर्याप्त साक्ष्यों के आधार पर बताया कि वैश्विक ताप की वजह से पृथ्वी की सतह का तापमान लगातार बढ़ रहा है। वैज्ञानिक दृष्टि से वैश्विक ताप का अर्थ है ग्रीन हाउस गैसों के बढ़ते स्तर के कारण पृथ्वी की सतह के तापमान में वृद्धि, जबकि जलवायु परिवर्तन का अर्थ पृथ्वी की जलवायु में होने वाला दीर्घकालिक परिवर्तन से है। वर्ष 1972 में ब्रिटिश रसायनशास्त्री जेम्स लवलाक और सूक्ष्मजीव विज्ञानी लिन मार्गुलिस ने 'गैया परिकल्पना' प्रस्तुत किया। 'गैया' एक ग्रीक देवी का नाम है। इस परिकल्पना का नाम जेम्स लवलाक ने उपन्यासकार और नोबेल पुरस्कार विजेता विलियम गोल्डिंग के सुझाव पर रखा था। इस परिकल्पना में बताया गया कि पृथ्वी एक जीवंत प्रणाली है। इसमें जैविक और अजैविक दोनों घटक शामिल हैं।

वर्ष 2000 में जेम्स लवलाक ने कार्बन डाइआक्साइड की अधिक मात्रा में मौजूदगी को पर्यावरण के लिए हानिकारक बताया था। आज वायुमंडल में 52 फीसद कार्बन डाइआक्साइड की मात्रा बढ़ गई है। पृथ्वी की सतह का तापमान 2.5 फारेनहाइट तक बढ़ चुका है। रसायन वैज्ञानिक वालेस ब्रोकर का कहना है कि वैश्विक तापमान में वृद्धि या जलवायु परिवर्तन की तुलना में वर्षा के अनुक्रम और समुद्र के स्तर में होने वाले परिवर्तन का मानव जीवन पर कहीं गहरा प्रभाव पड़ने की संभावना है। नासा के वैज्ञानिक 'ग्लोबल वार्मिंग' पर हर महीने रपट जारी करते हैं। पिछले वर्ष की रपट में नासा के वैज्ञानिकों ने अप्रैल 2024 को सबसे गर्म महीने के रूप में दर्ज किया था। इसके पहले वर्ष 2023 में उन्होंने बताया कि बीसवीं सदी के औसत तापमान की तुलना में 1.18 डिग्री सेल्सियस ज्यादा तापमान की वृद्धि हुई है। वैज्ञानिकों ने यह भी अनुमान लगाया है कि 2035 तक वैश्विक तापमान में 0.3 से 0.7 डिग्री सेल्सियस की वृद्धि हो सकती है।

इन तथ्यों के आलोक में यह बात स्पष्ट है कि आने वाला हर अगला

वर्ष अब कितना चुनौतीपूर्ण होगा। भारत में भी ऋतु चक्र में बदलाव की वजह से कहीं अति वृष्टि और कहीं अनावृष्टि जैसी स्थितियां पैदा हो रही हैं। आने वाला हर साल पिछले साल की तुलना में बढ़ते तापमान की वजह से मानव जीवन के साथ-साथ जलचर, थलचर और नभचर के लिए भी मुश्किल होता जा रहा है। इस साल जनवरी में ठंड का अंतराल बहुत छोटा रहा। जनवरी के अंत और फरवरी की शुरुआत में, खासकर बसंत पंचमी के बाद, मौसम में अचानक ऐसा परिवर्तन आया कि बसंत ऋतु के आगमन का जैसे पता ही नहीं चला। ऐसा लग रहा है कि हम सीधे शरद ऋतु से ग्रीष्म ऋतु में प्रवेश कर गए हैं। बसंत ऋतु की मस्ती, उल्लास-आनंद और मादकता हमारे जीवन से जैसे गायब है।

> पृथ्वी पर बढ़ते तापमान का खेती-किसानी पर भी व्यापक असर पड़ने की संभावना है। अक्तूबर के बाद और रबी की बुआई के समय आमतौर पर मौसम शुष्क रहा। सरकारी आंकड़े बता रहे हैं कि पिछले साल की तुलना में इस साल गेहूं की बुआई के रकबे में 12 लाख हेक्टेयर और दलहनी फसलों की बुआई के रकबे में आठ लाख हेक्टेयर की वृद्धि हुई है। बढ़ते तापमान की वजह से रबी की फसलों का उत्पादन प्रभावित हो सकता है। खासकर गेहूं की पैदावार पर बढ़ते तापमान का असर होना स्वाभाविक है। जाहिर है कि भारत की खाद्यान्न सुरक्षा भी इससे अवश्य प्रभावित होगी।

पृथ्वी पर बढ़ते तापमान का खेती-किसानी पर भी व्यापक असर पड़ने की संभावना है। अक्तूबर के बाद और रबी की बुआई के समय आमतौर पर मौसम शुष्क रहा। सरकारी आंकड़े बता रहे हैं कि पिछले साल की तुलना में इस साल गेहूं की बुआई के रकबे में 12 लाख हेक्टेयर और दलहनी फसलों की बुआई के रकबे में आठ लाख हेक्टेयर की वृद्धि हुई है। बढ़ते तापमान की वजह से रबी की फसलों का उत्पादन प्रभावित हो सकता है। खासकर गेहूं की पैदावार पर बढ़ते तापमान का असर होना स्वाभाविक है। जाहिर है कि भारत की खाद्यान्न सुरक्षा भी इससे अवश्य प्रभावित होगी। अक्तूबर के बाद और रबी की बुआई के समय आमतौर पर मौसम शुष्क रहा। सरकारी आंकड़े बता रहे हैं कि पिछले साल की तुलना में इस साल गेहूं की बुआई के रकबे में 12 लाख हेक्टेयर और दलहनी फसलों की बुआई के रकबे में आठ लाख हेक्टेयर की वृद्धि हुई है। बढ़ते तापमान की वजह से रबी की फसलों का उत्पादन प्रभावित हो सकता है। खासकर गेहूं की पैदावार पर बढ़ते तापमान का असर होना स्वाभाविक है। जाहिर है कि भारत की खाद्यान्न सुरक्षा भी इससे अवश्य प्रभावित होगी।

पृथ्वी पर बढ़ते तापमान का खेती-किसानी पर भी व्यापक असर पड़ने की संभावना है। अक्तूबर के बाद और रबी की बुआई के समय आमतौर पर मौसम शुष्क रहा। सरकारी आंकड़े बता रहे हैं कि पिछले साल की तुलना में इस साल गेहूं की बुआई के रकबे में 12 लाख हेक्टेयर और दलहनी फसलों की बुआई के रकबे में आठ लाख हेक्टेयर की वृद्धि हुई है। बढ़ते तापमान की वजह से रबी की फसलों का उत्पादन प्रभावित हो सकता है। खासकर गेहूं की पैदावार पर बढ़ते तापमान का असर होना स्वाभाविक है। जाहिर है कि भारत की खाद्यान्न सुरक्षा भी इससे अवश्य प्रभावित होगी।

रूस-यूक्रेन युद्ध की वजह से दुनिया की खाद्यान्न आपूर्ति शृंखला पहले से डांवाडोल है। मगर अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने अपने पहले शासकीय आदेश में पेरिस समझौते की शर्तें मानने से इनकार कर दिया।

पेरिस समझौता हर देश के लिए एक निश्चित समय सीमा के तहत वैधानिक जिम्मेदारी तय करता है। राष्ट्रपति ट्रंप खुद को ऐसी वैधानिक हदबंदी से परे मानते हैं। इससे वैश्विक स्तर पर जलवायु संकट का सामना करने के लिए हरित जलवायु कोष में वित्तीय संसाधन जुटाने के अभियान को धक्का लगेगा। यहां यह ध्यान रखना जरूरी है कि चीन के बाद कार्बन उत्सर्जन के मामले में अमेरिका दूसरे स्थान पर है। पर्यावरण की सेहत लगातार खराब हो रही है। ऐसे ज्वलंत मुद्दे पर अमेरिका की बेफिक्री समझ से परे है। हिंदी कवि जयशंकर प्रसाद की ये पंक्तियां दुनिया की तबाही से बेखबर ऐसे देश के नेतृत्व और व्यवहार को बयान करती है- 'अपने में सब कुछ भर कैसे व्यक्ति विकास करेगा/ यह एकांत स्वार्थ भीषण है अपना नाश करेगा।'

सात के दशक के अर्थशास्त्री ईएफ शूमाकर का कहना है कि औद्योगिक उत्पादन करते समय उन साधनों का उपयोग करना चाहिए, जिनका नवीकरण और दोबारा उत्पादन किया जा सके। 'उपयोग करो और फेंक दो' के बजाय उसे दोबारा उपयोग किया जा सके। शूमाकर यह भी मानते हैं कि पेट्रोलियम पदार्थों, कोयला और लोहे पर आधारित क्षणभंगुर सभ्यता से निश्चित ही वह सभ्यता बेहतर होगी, जो प्रकृति से सामंजस्यपूर्ण रिश्ता कायम करते हुए यह समझ विकसित कर सके कि आत्मसंयम, स्वयं आरोपित सीमा बंधन और अपनी सीमाओं का ज्ञान ये जीवनरक्षक गुण हैं। आर्थिक विकास एक सीमा तक ही लाभदायक है, जीवन में जटिलता का संचार एक सीमा तक ही संभव है। दक्षता और उत्पादकता के लिए प्रयास एक सीमा तक ही ठीक है। पुनः प्राप्त किए जा सकने वाले साधनों का उपयोग एक सीमा तक करना ही बुद्धिमानी है।

इस संदर्भ में यह सुझाव भी गौर करने लायक है कि जलवायु परिवर्तन का सामना करने के लिए हमें अपनी जीवन शैली, जीवन दृष्टि और जीवन का ध्येय बदलना होगा। जलवायु परिवर्तन का सवाल आज एक विकट वैश्विक समस्या के रूप हमारे सामने खड़ा है। ऐसे समय में हमें महात्मा गांधी की यह चेतावनी याद आती है- एक समय आएगा जब अपनी जरूरतों को कई गुना बढ़ाने की अंधी दौड़ में लगे लोग, जब अपने किए को देखेंगे, तब कहेंगे कि अरे! हमने यह क्या किया।

मौन का कवच

शिशिर शुक्ला

जीवन सम-विषम परिस्थितियों की एक सततवाहिनी सरिता है। परिस्थितियां अपने साथ अनुकूलता और प्रतिकूलता के संगम को सदा समाहित किए रहती हैं। अक्सर जीवन में ऐसे क्षण आते हैं, जब हमें परिस्थितियों के कठोर आघात का सामना करना पड़ता है। इन आघातों से स्वयं को सुरक्षित रखने के लिए हमारे पास एक प्रकृति प्रदत्त और उत्कृष्टतम सुरक्षा कवच सदैव विद्यमान रहता है। इस अमूल्य और अभेद्य कवच का नाम है- मौन। मौन हमारे और बाह्य प्रतिकूल दशाओं के मध्य एक ढाल बनकर जमा रहता है। लेकिन मौन आखिरकार है क्या? मौन का अर्थ समझने के लिए हमें इसकी गूढ़ता पर दृष्टिपात करने का प्रयास करना होगा। मौन का सीधा-सा अर्थ है- शब्दों, गतिविधियों, क्रियाओं और विचारों का संतुलन। जब हम इन सभी की मापनी पर खुद को शून्य की स्थिति में स्थिर कर पाने में सक्षम और समर्थ हो जाते हैं, तभी यह कहा जा सकता है कि हम मौन को साध लिया है। चुप रहने या न बोलने को ही मौन की संज्ञा दे देना एक नितांत सतही बात होगी।

हम कल्पना करें कि कोई विकट परिस्थिति हमसे टकरा रही है और ऐसी दशा में अगर हम प्रतिक्रिया के पैमाने पर खुद को शून्य की स्थिति पर दृढ़तापूर्वक जमाए रखने में सफल हो जाते हैं, तो निस्संदेह हम मौन के सच्चे साधक हैं। लेकिन अगर परिस्थितियों का यही झोंका हमें प्रतिक्रियाओं के लिए विवश कर देता है, तब फिर इसका सीधा-सा अर्थ है कि हम अभी मौन से अपरिचित हैं। परिस्थितियों का तो कहना ही क्या, उनके इतने प्रकार और भेद हैं कि गणना करना मुश्किल होगा। ये बाह्य वातावरण से भी उत्पन्न होती हैं और हमारे अंतर्मन के भीतर भी इनके सृजन की घटना संपन्न होती है। इस बात से लेशमात्र भी फर्क नहीं पड़ता कि परिस्थिति आंतरिक है या बाह्य, हमारे अनुकूल है या प्रतिकूल। सीधा-सा मापदंड यही है कि अगर परिस्थिति के जन्म लेने और हमारे साथ संघट्ट करने पर हमारी ओर से प्रतिक्रिया व्यक्त हुई, तो फिर हम मौन से पूर्णतया अनभिज्ञ हैं और अगर नहीं हुई तो कहीं न कहीं हमारे द्वारा मौन की ओर उन्मुख होने का प्रयास किया गया है।

> **दुनिया मेरे आगे**
>
> आंतरिक और बाह्य विक्षोभों से अपने अंतर्मन को बचाने का एकमात्र साधन मौन है। इसके माध्यम से हम अपने हृदय में प्रवाहित होने वाली भावनाओं के उस महासागर को नियंत्रित कर सकते हैं, जिसके अनियंत्रित होने की दशा में हमारा संपूर्ण संतुलन ही प्रभावित हो सकता है।

मौन किसी भी प्रकार की परिस्थिति से सुरक्षा के लिए एक सर्वोत्तम कवच की भूमिका अदा करता है। मौन के माध्यम से हम अपने अंतस में व्याप्त कोलाहल को नियंत्रित करके उसे आत्मिक शांति में रूपांतरित कर सकते हैं। आंतरिक और बाह्य विक्षोभों से अपने अंतर्मन को बचाने का एकमात्र साधन मौन है। इसके माध्यम से हम अपने हृदय में प्रवाहित होने वाली भावनाओं के उस महासागर को नियंत्रित कर सकते हैं, जिसके अनियंत्रित होने की दशा में हमारा संपूर्ण संतुलन ही प्रभावित हो सकता है। अंतर्मन की स्थिरता को प्राप्त करने के लिए यह परम आवश्यक है कि परिस्थितियों का आवेग उस पर आक्रमण न करने पाए। मगर यह भी एक कटु सत्य है कि आक्रांता को आक्रमण करने से रोकना एक दुस्साध्य कार्य है। ऐसी दशा में एक बेहतर विकल्प के रूप में स्वयं को एक सुरक्षा कवच अवश्य पहनाया जा सकता है। परिस्थितियों के आक्रमण से सुरक्षा के लिए मौन ही सर्वोत्तम कवच है। हमारा प्रयास यह होना चाहिए कि हम बुरी और अच्छी, दोनों तरह की दशाओं में स्वयं को मौन के माध्यम से संतुलित रखें, क्योंकि आवश्यकता से अधिक अनुकूलता भी हमारे लिए नुकसानदेह है और आवश्यकता से अधिक प्रतिकूलता भी।

एक अन्य लाभ यह है कि मौन का कवच पहनकर हम परिस्थितियों से अपना ध्यान हटा सकते हैं। अब वही ध्यान हम आत्मपरिष्करण, आत्मपरिमार्जन और आत्मशुद्धि की ओर केंद्रित कर सकते हैं। अहंकार जैसे दुर्गुणों से मुक्ति मौन के माध्यम से ही संभव है। इसके आगोश में जाकर हम अपने अंदर सद्गुणों और आत्मज्ञान के अंकुर को प्रस्फुटित होने के लिए प्रेरित कर सकते हैं। अनेक रहस्यपूर्ण प्रश्नों का उत्तर भी मौन का कवच धारण करने के उपरांत ही खोजा जा सकता है। किसी युद्ध को उस स्थिति में भी जीता जा सकता है, जबकि आक्रमणकर्ता का कोई वार हम पर कोई असर न कर सके। ऐसा तभी संभव है, जब हम कोई सुरक्षा कवच धारण करके ही रणक्षेत्र में उतरे हों। परिस्थितियों के विरुद्ध युद्ध में मौन ही हमारा सुरक्षा कवच होता है। इसके माध्यम से हम अपने मन मस्तिष्क को नकारात्मकता की चपेट में आने से बचा सकते हैं। यह ध्यान के लिए एक अनिवार्य शर्त है और ध्यान स्वयं को अनंत ऊर्जा से जोड़ने के लिए। आत्मसाक्षात्कार मौन के माध्यम से ही संभव है, लेकिन मौन की अवस्था को प्राप्त करना भी कोई सहज कार्य नहीं है।

हम कल्पना कर सकते हैं कि हमें कोई गहरा जख्म देने के उपरांत हमारा मुंह कसकर दबा दिया जाए, ताकि हमारी चीख बाहर न आ सके, तो क्या यह कहा जाएगा कि हमने मौन धारण कर लिया? चुप किए जाने के और भी तरीके हो सकते हैं। मौन तब होगा, जब हमारा ध्यान उस कष्ट की ओर से हट जाए। परिस्थितियों की ओर से अपना ध्यान ऐसे हटाना कि वे हमसे किसी भी कीमत पर कोई प्रतिक्रिया कराने में सफल न हो सकें, यही मौन की वास्तविक संकल्पना है। मौन का अभ्यास करके ही हम स्वयं को प्रकृति के अनूठे सौंदर्य और शक्तियों से जोड़ सकते हैं। दूसरे शब्दों में कहा जाए तो मौन ही वह साधन है, जिसके द्वारा आत्मा का परमात्मा से मिलन कराया जा सकता है। मौन के कवच को धारण करके ही जीवन को शांति के मार्ग की ओर अग्रसर होने के लिए प्रेरित कर पाना संभव है।

साइबर संजाल

आजकल इंटरनेट किशोरों और नौजवानों को पथभ्रष्ट कर रहा है। इसलिए अब जरूरी हो गया है कि मनोरंजन के हर साधन की निगरानी की जाए। तकनीक का उचित प्रयोग किया जाए, तो वह लाभकारी सिद्ध होती है और दुरुपयोग हानिकारक। इंटरनेट के जरिए घर बैठे हर तरह के बिलों की अदायगी की जा सकती है। युवा घर बैठे अपने भविष्य को उज्ज्वल बनाने की तैयारी कर सकते हैं। आजकल दूरसंचार कंपनियों की आपसी प्रतिस्पर्धा के कारण उपभोक्ताओं को कम शुल्क पर इंटरनेट उपलब्ध है। जिससे खास तौर से युवा पीढ़ी अधिक प्रभावित हुई है। बेहतर होगा कि युवा इसका प्रयोग अपना ज्ञान बढ़ाने के लिए प्रयोग करें, ताकि उनके लिए यह वरदान साबित हो। सोशल मीडिया की कुछ लोग समय गुजारने का जरिया मानते हैं और शरारती तत्त्व इसका दुरुपयोग करते हैं, लेकिन इसके बेजा इस्तेमाल को रोकने के लिए सरकार दुलमुल रवैया अपनाए हुए है। सोशल मीडिया पर जो परोसा जाता है, जरूरी नहीं कि यह सारा ही गलत हो, क्योंकि आज वहां पर लोग अपना अनुभव रखते हैं, जो किसी के काम भी आ सकता है। वहीं हमारे देश में जिस तरह साइबर अपराध बढ़ रहा है, उसे रोका जाना चाहिए।

- राजेश कुमार चौहान, जालंधर

जीत का परचम

दुबई में खेले गए चैंपियंस ट्राफी के मुकाबले में चिर-प्रतिद्वंद्वी पाकिस्तान को हरा कर भारत ने आठ साल पहले मिली हार का बदला ले लिया है। वर्ष 2017 में इंग्लैंड के ओवल में खेले गए चैंपियंस ट्राफी के फाइनल में पाकिस्तान ने भारत को हरा दिया था। उस फाइनल मुकाबले में कप्तान विराट कोहली मात्र पांच रन बना कर आउट हो गए थे और रोहित शर्मा तो खाता भी नहीं खोल पाए थे। इस बार दुबई में खेले गए मैच में रोहित शर्मा के नेतृत्व में भारतीय टीम ने खेल के हर मोर्चे पर पाकिस्तान को पानी पिलाते हुए जीत दर्ज की। विराट कोहली के आगे पाकिस्तान की एक नहीं चली। कोहली ने इस मैच में न सिर्फ शानदार शतक लगाया, बल्कि 'एकदिवसीय' में चौदह हजार रन भी पूरे किए। कोहली ने दो कैच पकड़ कर भारत की ओर से सबसे ज्यादा कैच पकड़ने का रेकार्ड भी अपने नाम दर्ज किया। हर क्षेत्र में हमारी टीम का प्रदर्शन बेजोड़ रहा।

- अनित कुमार राय, धनबाद

उम्मीद की यात्रा

आगामी बारह मार्च को मारीशस अपना राष्ट्रीय दिवस मनाएगा। वर्ष 1968 में इसी दिन मारीशस को ब्रिटिश शासन से आजादी मिली थी। राष्ट्रीय दिवस समारोह में प्रधानमंत्री मुख्य अतिथि के रूप में शामिल होंगे। मारीशस के प्रधानमंत्री नवीन रामगुलाम ने पिछले दिनों भारतीय प्रधानमंत्री की यात्रा की घोषणा की और कहा कि यह हमारे लिए सम्मान की बात है। इस पर पूरे सदन ने इसका स्वागत किया। यह नए भारत की ताकत का परचम है। हमारे देश के लिए लिए गर्व की बात है। दोनों देशों के बीच आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक संबंध रहे हैं। मारीशस में बड़ी संख्या में भारतवंशी रहते हैं। वहां नव निर्माण में उनकी बड़ी भूमिका रही है। कोई दो राय नही कि प्रधानमंत्री की इस यात्रा से द्विपक्षीय संबंधों में घनिष्ठता बढ़ेगी। माना जा रहा है कि व्यापार और निवेश पर भी चर्चा संभव है। इस यात्रा से भारत और मारीशस के ऐतिहासिक रिश्तों में नया अध्याय जुड़ेगा।

- राजेंद्र कुमावत, जयपुर

भाषा और अस्मिता

भाषा केवल अभिव्यक्ति का माध्यम नहीं, हमारी सांस्कृतिक अस्मिता और बौद्धिक समृद्धि की आधारशिला है। समकालीन वैश्वीकरण और तकनीकी आधिपत्य की अंधी दौड़ में हम भाषाई एकरूपता के नाम पर भाषाओं की बहुलता को तिरस्कृत कर रहे हैं। यह प्रवृत्ति न केवल हमारी सांस्कृतिक विरासत को संकुचित करती है, अपितु ज्ञान के बहुआयामी विस्तार को भी बाधित करती है। किसी भाषा का विलुप्त होना, संपूर्ण जीवनदृष्टि का अंत है। इसलिए यह आवश्यक है कि हम मातृभाषा को आधुनिक शिक्षा प्रणाली में यथोचित स्थान दें, परिवारों में संवाद के माध्यम के रूप में प्रतिष्ठित करें तथा इसे पारंपरिक औपचारिकता से अधिक जीवंत सांस्कृतिक आधार बनाएं। भाषा संरक्षण केवल भाषाविदों का दायित्व नहीं, पूरे समाज की जिम्मेदारी है। मातृभाषा की रक्षा बौद्धिक और सांस्कृतिक स्वतंत्रता का भी प्रतीक है।

- अवनीश कुमार गुप्ता, आजमगढ़

हमें लिखें, हमारा पता : edit.jansatta@expressindia.com | chaupal.jansatta@expressindia.com

जर्मनी में चुनाव

मर्ज की विजय

जर्मनी में चांसलर के चुनाव में कंजरवेटिव मर्ज की विजय हुई है। जर्मनी में पिछले साल के अंत में तीन दलों की गठबंधन सरकार गिरने के बाद तुरंत संघीय चुनाव कराए गए। इस चुनाव में 59.2 मिलियन मतदाताओं ने देश का राजनीतिक परिदृश्य पूरी तरह बदल दिया इससे कंजरवेटिव पार्टी तथा धुर-दक्षिणपंथ का वर्चस्व स्थापित हो गया। कंजरवेटिव क्रिश्चियन डेमोक्रेटिक यूनियन-सीडीयू के 69 वर्षीय नेता फ्रेडरिक मर्ज इस दौड़ में सबसे आगे थे और अब वे कई दशक बाद जर्मनी के पहले कंजरवेटिव चांसलर बन गए हैं। मर्ज ने आर्थिक स्थायित्व कठोर आप्रवास नीतियों तथा यूरोप में जर्मनी के नेतृत्व पर पुनः जोर देने का वादा किया था। धुर-दक्षिणपंथी आल्टरनेटिव फर जर्मनी-एएफडी को भी ऐतिहासिक रूप से लाभ मिला है और वह दूसरी सबसे बड़ी राजनीतिक शक्ति बन कर उभरी है। इन सबका खामियाजा चांसलर ओलाफ शुल्ज़ की सोशल डेमोक्रेटिक पार्टी-एसपीडी को भुगतना पड़ा है जो तीसरे स्थान पर आई है। उसे जर्मनी में व्याप्त आर्थिक गतिरोध तथा पिछली गठबंधन सरकार से जनता के व्यापक असंतोष का खामियाजा भुगतना पड़ा है। ग्रीन पार्टी तथा फ्री डेमोक्रेट्स उनके गठबंधन से अलग हो गए थे जिसके कारण उसे मतदाताओं ने तगड़ा धक्का दिया। इस बीच आंतरिक मतभेदों तथा राजनीतिक भावनाओं में व्यापक परिवर्तन के कारण वामपंथी पार्टी लगभग अप्रासंगिक हो गई है।

जर्मनी में यह चुनाव एक महत्वपूर्ण मोड़ पर हुआ जब अनेक घरेलू और

अंतरराष्ट्रीय चुनौतियों ने राष्ट्रीय विमर्श पर व्यापक प्रभाव डाला है। जर्मनी यूरोपीय संघ की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है, लेकिन पिछले वर्षों में वह धीमी वृद्धि, बढ़ती मुद्रास्फीति तथा औद्योगिक प्रतियोगिता में पिछड़ने का शिकार हो गई थी। ऐसे में अनेक मतदाता आर्थिक स्थायित्व बहाल करने तथा खोज को बढ़ावा देने वाले नेता की तलाश में थे और उन्होंने मर्ज को पसंद किया है। इसके साथ ही देश में आप्रवास नीतियों पर बहस चल रही थी जिसमें बड़ी संख्या में जर्मन नागरिकों ने बढ़ते आप्रवासियों के कारण जर्मनी की एकजुटता तथा सीमा सुरक्षा पर चिन्ता प्रकट की थी। एएफडी ने भी इन भावनाओं का लाभ उठा कर कठोर आप्रवास नियंत्रणों की मांग की थी। बढ़ते भू-राजनीतिक तनावों के साथ ही जर्मनी में चीन, रूस और अमेरिका से संबंधों को लेकर विवाद की स्थिति थी। फ्रेडरिक मर्ज ने यूरोपीय संघ पर अमेरिका के बढ़ते प्रभाव को लेकर जो संकेत दिए हैं उनसे जर्मनी की विदेश नीति में परिवर्तनों की संभावना है। जर्मनी यूरोप में अपना वर्चस्व पुनः स्थापित करना चाहता है। जर्मनी में राजनीति विश्लेषक काफी समय से इस मुद्दे पर विचार कर रहे थे कि एएफडी को मजबूती क्यों मिल रही है? वास्तव में इसके पीछे अनेक कारण थे। पहला, आर्थिक असंतोष मतदाताओं को लोकरंजक वादों की ओर ले जा रहा था और एएफडी स्वयं को परिवर्तन की पार्टी के रूप में पेश कर रही थी। दूसरा, आप्रवास तथा ऊर्जा नीतियों के कारण ओलाफ शुल्ज़ के गठबंधन के खिलाफ जनता में गुस्सा बढ़ रहा था जिसने राष्ट्रवादी भावनाओं को बढ़ावा दिया। इस चुनाव में शोसल मीडिया व खासकर 'टिकटाक' ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। कंजरवेटिव यूनियन तथा एएफडी ने टिकटाक का बेहतर प्रयोग कर युवा मतदाताओं तक अपनी मजबूत पहुंच बनाई तथा संक्षिप्त व आकर्षक वीडियो के माध्यम से उनको संदेश भेजे। अक्सर इन संदेशों में नकारात्मक तत्वों का वर्चस्व होता था। जर्मनी में चुनाव के परिणाम ने दुनिया में कंजरवेटिव शक्तियों के प्रति जनता के बढ़ते झुकाव तथा वामपंथी दलों से मोहभंग का संकेत भी दिया है। जर्मनी में कई दशक बाद कंजरवेटिव यूनियन की शानदार विजय तथा एएफडी की महत्वपूर्ण बढ़त का न केवल जर्मनी और यूरोप, बल्कि पूरी दुनिया की राजनीति पर असर पड़ेगा। इसका प्रभाव यूरोप-अमेरिका संबंधों तथा 'नाटो' पर भी पड़ सकता है।

रिजर्व बैंक का उचित दृष्टिकोण

मुद्रास्फीति में लगातार कमी को देखते हुए भारतीय रिजर्व बैंक ने 'तटस्थ' दृष्टिकोण बनाए रखने का निर्णय किया है। वह तरलता तथा मांग को बढ़ावा देना चाहता है।

उत्तम गुप्ता
(लेखक, नीति विश्लेषक हैं)

भारतीय रिजर्व बैंक-आरबीआई के गवर्नर संजय मल्होत्रा ने 7 फरवरी, 2025 को छः सदस्यीय मौद्रिक नीति समिति-एमपीसी बैठक के निर्णय की घोषणा की। यह वर्तमान वित्त वर्ष में छठी द्विपक्षीय बैठक थी। इसने नीतिगत दर या रेपो रेट को 25 प्वाइंट घटा कर 6.25 प्रतिशत पर ला दिया, जिस ब्याज दर पर आरबीआई बैंकों को पैसा देता है। यह लगभग पांच साल में रेपो दर में पहली कटौती है। इसके साथ ही उसने अपना तटस्थ दृष्टिकोण जारी रखा है जिसे उसने 10 अक्टूबर, 2024 की बैठक में चौथी मासिक समीक्षा घोषणा में बदल दिया था, जबकि पहले उसका दृष्टिकोण 'विड्राल आफएकमोडेशन' था।

2016 में केन्द्र सरकार ने एमपीसी को मौद्रिक नीति परिभाषित करने तथा मुद्रास्फीति लक्ष्य को निर्देशित नीतिगत दर समेत प्रमुख ब्याज दर निर्धारित करने का संस्थागत ढांचा तैयार किया था। इसने आरबीआई को पालिसी दर इस प्रकार निर्धारित करने का आदेश दिया था ताकि उपभोक्ता मूल्य सूचकांक को लक्षित 4 प्रतिशत से दो प्रतिशत कम या अधिक की सीमा में रखा जा सके। आरबीआई हर वित्त वर्ष में दो महीने पर नीतिगत दर तय करता है। शुरुआत में यह दर पांच साल के लिए 31 मार्च, 2021 को तय की गई थी, पर बाद में इसे अगले पांच साल के लिए बढ़ा दिया गया था। वर्तमान आदेश 31 मार्च, 2026 तक लागू रहेगा। आरबीआई मुद्रास्फीति को लक्षित करने के साथ तरलता निर्धारित करने का एक और महत्वपूर्ण नीतिगत उपकरण प्रयोग करता है जिसका अर्थ बैंकिंग व्यवस्था में कर्ज की उपलब्धता तय करना है।

नीतिगत दर में कमी के साथ ही ज्यादा तरलता निर्धारित करने से ऐसा परिदृश्य बनता है जिसे 'एकमोडेटिव' नीतिगत दृष्टिकोण कहा जाता है। जून, 2019 में यह शब्दावली निर्वतमान गवर्नर शक्तिकांत दास ने तय की थी, जब उन्होंने नीतिगत दर में आक्रामक कमी के साथ ही कर्ज उपलब्धता बढ़ाने का प्रयास किया था। जून, 2022 में आरबीआई ने अपना दृष्टिकोण बदल कर 'विड्राल आफ एकमोडेशन' कर दिया जो 9 अक्टूबर, 2024 तक जारी रहा। इसके बाद एमपीसी ने अपनी चौथी द्विपक्षीय समीक्षा बैठक में 'तटस्थ' दृष्टिकोण अपनाने का फैसला किया। 'तटस्थ' दृष्टिकोण का अर्थ है कि आरबीआई ने अपने विकल्प खुले रखे हैं जिसका अर्थ है कि वह न कर्ज की उपलब्धता घटा कर तरला कम करेगा और न नीतिगत दरों को बढ़ा कर कम ब्याज दरों पर बेलगाम कर्ज को बढ़ावा देगा। हालांकि, मुद्रास्फीति को लक्षित करना महत्वपूर्ण है, पर समान रूप से मौद्रिक नीति पर भी गौर करना जरूरी है जो उच्च वृद्धि दर को बनाए रखने में सहायक है। वर्तमान वित्त वर्ष की दूसरी तिमाही में जीडीपी वृद्धि दर गिर कर 5.4 प्रतिशत हो गई जो 2023-24 वित्त वर्ष की दूसरी तिमाही में 8.1 प्रतिशत थी।

वर्तमान वित्त वर्ष 2024-25 में इसके लगभग 6.4 प्रतिशत रहने का अनुमान है, जबकि वित्त वर्ष 2023-24 में यह 8.2 प्रतिशत थी। इस पृष्ठभूमि में देखने तथा भारत को 2047 तक 'विकसित अर्थव्यवस्था' बनाने के लिए लगातार 8 प्रतिशत वृद्धि दर बनाए रखने की आवश्यकता को देखते हुए आरबीआई आवश्यक कदम उठा सकती थी। वह 'एकमोडेटिव' नीति को छोड़ कर नीतिगत दर में महत्वपूर्ण कटौती कर बैंकिंग व्यवस्था में समुचित नकदी प्रवाहित कर सकता था। लेकिन उसने रेपो दर में थोड़ी सी 0.25 प्रतिशत कटौती कर 'तटस्थ' दृष्टिकोण बनाए रखा है। आरबीआई की यह हिचक उस सोच का परिणाम है जो पूर्व गवर्नर दास के विचारों में उस समय सामने आई थी जब उन्होंने वर्तमान वित्त वर्ष की पहली द्मैमासिक नीति की घोषणा की थी। उन्होंने कहा था, 'हाथी अब टहलने निकल गया है और शायद वह जंगल में वापस लौट रहा है। हम चाहते हैं कि हाथी जंगल में वापस चला जाए और वहां स्थाई आधार पर बना रहे।' सरल भाषा में उनका कहना था कि हमें उस समय तक ब्याज दरों में कटौती की कोई आवश्यकता नहीं है जब तक मुद्रास्फीति की दर 4 प्रतिशत पर न पहुंच जाए और उस स्तर पर बनी रहे। निर्वतमान गवर्नर ने यह सोच बनाए रखी। फरवरी, 2023 को नीतिगत दर अपने शिखर 6.5 प्रतिशत पर थी। वित्त वर्ष 2022-23 में उपभोक्ता मूल्य सूचकांक-सीपीआई मुद्रास्फीति दर 8 प्रतिशत के आसपास थी।

> **समस्या यह है कि आरबीआई मुद्रास्फीति से बहुत भयभीत है। आरबीआई के वर्तमान गवर्नर मल्होत्रा ने माना है कि मुद्रास्फीति में कमी आ रही है। लेकिन इसके बावजूद उन्होंने वैश्विक आर्थिक चुनौतियों का हवाला देते हुए तटस्थ दृष्टिकोण छोड़ने से इनकार कर दिया है।**

इसके अगले वर्ष इसमें कमी आनी शुरू हुई और यह जुलाई, 2023 में 7.4 प्रतिशत, सितंबर 2023 में 5 प्रतिशत तथा अक्टूबर 2023 में 4.8 प्रतिशत पर आ गई। यह जनवरी-फरवरी 2024 में 5.1 प्रतिशत पर थी। वित्त वर्ष 2023-24 में यह 5.4 प्रतिशत थी। वर्तमान वित्त वर्ष में भी यह नीची रही है। जून 2024 में यह 5.08 प्रतिशत तथा जुलाई 2024 में 3.54 प्रतिशत थी। अक्टूबर 2024 में थोड़े समय के लिए 6.2 प्रतिशत पर रहने के बाद यह जनवरी 2025 में घट कर 4.3 प्रतिशत हो गई। वित्त वर्ष 2024-25 में आरबीआई ने इसका अनुमान 4.8 प्रतिशत लगाया है। उपरोक्त को देखते हुए वित्त वर्ष 2023-24 की तीसरी तिमाही से सीपीआई मुद्रास्फीति 4 प्रतिशत से दो प्रतिशत कम या अधिक के लक्ष्य पर बनी रही है। वर्तमान वित्त वर्ष में भी यही स्थिति बनी हुई है। वित्त वर्ष 2025-26 में आरबीआई इसके 4.2 प्रतिशत पर बने रहने की आशा कर रहा है। इस प्रकार समुचित तरलता को बढ़ावा देने के लिए रेपो दर में काफी कमी का मजबूत मामला बनता है। इससे मांग बढ़ाने तथा आर्थिक प्रगति को गति देने में सहायता मिलती। इसके साथ ही लाखों कर्जदारों को अपना ईएमआई घटाने के साथ उद्योगों को भी सहायता मिलती। इससे खासकर एमएसएमई पर कर्जों का बोझ घट जाता। लेकिन ऐसा नहीं हुआ।

समस्या यह है कि आरबीआई मुद्रास्फीति से बहुत भयभीत है। आरबीआई के वर्तमान गवर्नर मल्होत्रा ने माना है कि मुद्रास्फीति में कमी आ रही है। लेकिन इसके बावजूद उन्होंने वैश्विक आर्थिक चुनौतियों का हवाला देते हुए तटस्थ दृष्टिकोण छोड़ने से इनकार कर दिया है। उनके अनुसार, 'वैश्विक मुद्रास्फीति में कमी की प्रगति थम गई है।' इसका अर्थ है कि उनको इसका प्रभाव सीपीआई पर पड़ने की आशंका है और ऐसे में 'तटस्थ दृष्टिकोण एमपीसी को बदलते मैक्रोइकोनोमिक परिदृश्य को देखते हुए लचीली प्रतिक्रिया का अवसर देगा।' सीपीआई मुद्रास्फीति में खाद्य मुद्रास्फीति का बड़ा योगदान है जिसका हिस्सा लगभग 40 प्रतिशत है।

इस पर मांग के पक्ष में काम करने वाले मौद्रिक नीति उपकरणों के बजाय सप्लाई पक्ष के मौसमी तत्वों का जदा प्रभाव पड़ता है। इस कारण मौसमी कारणों से सप्लाई में जरा भी बाधा आने पर खाद्य मुद्रास्फीति बढ़ती है। जब तक खाद्य पदार्थ सीपीआई का हिस्सा बने रहेंगे, मुद्रास्फीति के लक्ष्य हमेशा समस्या का कारण बनेंगे। भारत के मुख्य आर्थिक सलाहकार ने 2023-24 के आर्थिक सर्वेक्षण में इसे तत्काल यहां से हटाने की आवश्यकता बताई थी। उनका तर्क था कि मौद्रिक नीति का खाद्य पदार्थों के मूल्य पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है जो सप्लाई पक्ष के दबावों से प्रभावित होते हैं।

इन पर अल्पधिक तापमान, बैमौसम बरसात, ओलावृष्टि आदि का ज्यादा असर पड़ता है। मौसमी कारणों से सब्जियों के दाम बढ़ते हैं। मौद्रिक नीति तय करते समय आरबीआई की मुख्य जिम्मेदारी मैक्रोइकोनोमिक स्थिरता सुनिश्चित करना है जिसमें मुद्रास्फीति को नियंत्रण में रखना केन्द्रीय स्थान पर है। लेकिन यदि कर्ज के परिवेश में रियायत न बरती गई तो आर्थिक वृद्धि पर नकारात्मक प्रभाव पड़ सकते हैं।

कांगो गणराज्य में बढ़ता संकट

> **पिछले साल एम23 द्वारा कोल्टन समृद्ध क्षेत्र रूबाया पर कब्जा करने से पता चलता है कि आर्थिक हित विद्रोह के प्रक्षेपवक्र को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।**

देवाशीष जैना
(लेखक, विदेश नीति सीपकार्ड हैं)

कांगो लोकतांत्रिक गणराज्य के पूर्वी हिस्से में हाल ही में बढ़ी हिंसा इस क्षेत्र में गहरी जड़ें जमाए बैठी अस्थिरता की एक स्पष्ट चेतावनी है। एम23 विद्रोह का फिर से उभरना, जिसके कारण गोमा पर कब्जा हो गया और दक्षिण किवु में और आगे बढ़ गए, महज कांगो का आंतरिक संकट नहीं है—यह एक ऐसा संघर्ष है जिसके महत्वपूर्ण क्षेत्रीय और अंतर्राष्ट्रीय निहितार्थ हैं। रवांडा की भागीदारी, चाहे प्रत्यक्ष हो या अप्रत्यक्ष, विवादास्पद बनी हुई है, क्योंकि एम23 को उसका समर्थन होने के आरोप जारी हैं।

जबकि किगाली इन आरोपों से इनकार करता है, एम23 के संचालन की परिष्कृतता इसके समर्थन को लेकर गंभीर सवाल उठाती है। इस संकट के मूल में जातीय तनाव, राजनीतिक शिकायतों और आर्थिक शोषण का एक जटिल मिश्रण है, विशेष रूप से डीआरसी की विशाल खनिज संपदा के संबंध में।

हालांकि, किगाली इस बात पर जोर देता है कि वह रवांडा मुक्ति लोकतांत्रिक बलों (एफडीएलआर) से उत्पन्न खतरे का हवाला देते हुए आत्मरक्षा में काम कर रहा है, जो पूर्वी डीआरसी में सक्रिय एक हुतु मिलिशिया है जिसका 1994 के रवांडा नरसंहार के अपराधियों के साथ ऐतिहासिक संबंध है।

फिर भी, रवांडा की कार्रवाई सीमा सुरक्षा से परे है। संघर्ष के आर्थिक आयाम को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है, रवांडा पर कांगो के खनिजों, विशेष रूप से इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों में एक प्रमुख घटक कोल्टन के अवैध दोहन से लाभ कमाने का आरोप है।

पिछले साल एम23 द्वारा कोल्टन समृद्ध क्षेत्र रूबाया पर कब्जा करने से पता चलता है कि आर्थिक हित विद्रोह के प्रक्षेपवक्र को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। एम23 पूर्वी डीआरसी में जातीय तुत्सी के अधिकारों के लिए लड़ने का दावा करता है कूटनीतिक माध्यमों से राजनीतिक अधिकारों की बकालत करने के बजाय, यह समूह हिंसा, जबरन विस्थापन और मानवाधिकारों के उल्लंघन में लगा हुआ है। प्रमुख शहरों और संसाधन-समृद्ध क्षेत्रों पर कब्जा करने की इसकी रणनीति आत्मरक्षा से कहीं आगे तक फैले एक एजेंडे का सुझाव देती है। अंतर्राष्ट्रीय समुदाय द्वारा समर्थित डीआरसी ने एम23 के दावों को खारिज कर दिया है, यह तर्क देते हुए कि यह समूह रवांडा की क्षेत्रीय महत्वाकांक्षाओं के लिए एक प्रॉक्सी के रूप में काम कर रहा है।

दक्षिणी अफ्रीकी विकास समुदाय और पूर्वी अफ्रीकी समुदाय द्वारा तत्काल युद्धविराम का आह्वान करते हुए क्षेत्रीय नेताओं द्वारा शांति स्थापित करने का नवीनतम प्रयास, इस बढ़ती मान्यता को दर्शाता है कि संकट को केवल सैन्य साधनों के माध्यम से हल नहीं किया जा सकता है। हालांकि, जमीनी हकीकत कुछ और ही कहानी बयां करती है। एम23 ने हमलों को फिर से शुरू करने से पहले कुछ समय के लिए युद्धविराम की घोषणा की थी, जो यह संकेत देता है कि कूटनीतिक प्रयास युद्ध के मैदान के घटनाक्रमों के साथ तालमेल बिठाने के लिए संघर्ष कर रहे हैं।

रवांडा के खिलाफ संयुक्त राष्ट्र द्वारा लगाए गए प्रतिबंधों के लिए डीआरसी का आह्वान, किंशासा में विरोध प्रदर्शनों के साथ, जहाँ प्रदर्शनकारियों ने राष्ट्रपति पॉल कागामे के चित्रों को जलाया, दोनों देशों के बीच गहरी दरार का एक संकेत देता है।

राजनयिक संबंध टूटने और शत्रुता बढ़ने के साथ, बातचीत के जरिए समाधान की संभावनाएँ धूमिल बनी हुई हैं। विशुद्ध सैन्य समाधान से स्थायी शांति मिलने की संभावना नहीं है। कांगो की सेना ने ऐतिहासिक रूप से अच्छी तरह से सुसज्जित विद्रोही समूहों को नियंत्रित करने के लिए संघर्ष किया है, और संयुक्त राष्ट्र शांति मिशन, मोनूस्को की उपस्थिति ने हिंसा की नवीनतम लहर को रोकने के लिए बहुत कम किया है।

विदेशी सैन्य हस्तक्षेप, चाहे क्षेत्रीय बलों से हो या अंतर्राष्ट्रीय अभिनेताओं से, स्थिति को हल करने के बजाय इसे बढ़ाने का जोखिम उठाता है। आगे बढ़ने का सबसे व्यवहार्य मार्ग सैन्य नियंत्रण और राजनीतिक जुड़ाव का संयोजन है। आगे के क्षेत्रीय नुकसान को रोकने के लिए डीआरसी के सुरक्षा बलों को मजबूत करना महत्वपूर्ण है।

लेकिन राजनयिक प्रयासों को जातीय शिकायतों और आर्थिक शोषण सहित संघर्ष के मूल कारणों को भी संबोधित करना चाहिए। कोल्टन और अन्य कीमती संसाधनों की वैश्विक मांग यह सुनिश्चित करती है कि सशस्त्र समूह अवैध खनन कार्यों के माध्यम से खुद को बनाए रख सकते हैं। मजबूत अंतरराष्ट्रीय नियमों और जवाबदेही उपायों के बिना, संघर्ष क्षेत्रों से खनिजों का स्रोत बनाने वाली कंपनियां हिंसा के वित्तपोषण में मिलीभगत करती रहेंगी। संघर्ष के चक्र को तोड़ने के लिए संसाधन शोषण में उनकी भूमिका के लिए राज्य और गैर-राज्य अभिनेताओं दोनों को जवाबदेह ठहराना आवश्यक है। पूर्वी डीआरसी में चल रहा संकट सिर्फ एम23 या रवांडा की कथित संलिप्तता के बारे में नहीं है - यह एक बड़े भू-राजनीतिक संघर्ष का हिस्सा है जिसने दशकों से इस क्षेत्र को त्रस्त कर रखा है। जब तक क्षेत्रीय अभिनेता वास्तविक शांति प्रयासों के लिए प्रतिबद्ध नहीं होते और अंतर्राष्ट्रीय समुदाय अवैध खनिज व्यापार के खिलाफ सख्त उपाय लागू नहीं करता, तब तक संघर्ष जारी रहेगा।

स्थिरता के मार्ग के लिए सुरक्षा चिंताओं और आर्थिक प्रोत्साहनों दोनों को संबोधित करने की आवश्यकता है जो सशस्त्र समूहों को प्रेरित करते हैं। सार्थक कार्रवाई के बिना, पूर्वी डीआरसी हिंसा के चक्र में फंसा रहेगा, और इसके लोग एक ऐसे युद्ध का खामियाजा भुगतेंगे जो इसकी सीमाओं से बहुत दूर शक्तिशाली अभिनेताओं के हितों की सेवा करता है।

आप की बात

अद्वितीय पहल

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने मोटापे के बढ़ते प्रकोप को कुचलने के लिए एक अद्वितीय और संकल्पबद्ध पहल की शुरुआत की है। इस महाअभियान के लिए उन्होंने 10 तेजस्वी और प्रभावशाली व्यक्तित्वों, उमर अब्दुल्ला, आनंद महिंद्रा, मोहनलाल, निखुआ, मनु भाकर, मीराबाई चानु, नंदन नीलेकणि, आर. माधवन, श्रेया घोषाल और सुधा मूर्ति—को चुना है। इन प्रबुद्ध आत्माओं को यह पवित्र दायित्व सौंपा गया है कि वे इस मुहिम को न केवल गति दें, बल्कि देश के हर प्रांत, हर गांव तक स्वस्थ जीवन का प्रकाश फैलाएं। मोटापा अब महज सौंदर्य का शत्रु नहीं, बल्कि यह उच्च रक्तचाप, हृदय रोग, मधुमेह और कैंसर जैसे प्रलयंकारी रोगों का सूत्रधार बन चुका है। आधुनिक जीवन की अंधी दौड़, अस्वस्थमित भोजन और शारीरिक जड़ता ने इस संकट को और भयावह बना दिया है। प्रधानमंत्री का यह संकल्प एक संख्यात्र है—जनता को झकझोरने, संतुलित आहार और सतत व्यायाम के प्रति जागृत करने और भारत को स्वास्थ्य-संपन्न, शक्तिशाली राष्ट्र के रूप में गढ़ने का। इन 10 प्रेरणादायी शख्सियतों से प्रधानमंत्री ने आह्वान किया है कि वे इस आंदोलन को एक जनक्रांति में परिवर्तित करें, इसे एक अजेय शक्ति बनाएं। अब समय है कि हर देशवासी इस महायुद्ध का योद्धा बने, मोटापे के इस दानव से टकराए और भारत को ऊर्जा, बल और सामर्थ्य का प्रतीक बनाएं।

- **आरके जैन**, बड़वानी, मप्र

संघर्ष करते मजदूर

दो जून रोटी के लिए काम करते मजदूर न सुरंग न सीधर और न ही खदानों में सुरक्षित है। जब हादसे होते है तब मजदूरों की सुरक्षा पर सवाल उठते है लेकिन समय बीतने के साथ ही सब कुछ विस्मृत हो जाता है। जबकि शुरुआत में ही हादसे के बाद सुरक्षा उपायों पर होने वाली चर्चा और ठोस सुरक्षा इंतजाम की होती है। ऐसे जोखिमपूर्ण कार्यों में आधुनिक तकनीक और बचाव दल की तत्परता अनिवार्य होनी चाहिए ताकि भविष्य में इस तरह की त्रासदियों को टाला जा सके।तेलंगाना के नागरकुरनूल जिले में श्रीशैलम लेफ्ट बैंक कैनाल (एसएलबीसी) सुरंग के निर्माणाधीन हिस्से के ढहने से आठ श्रमिक पिछले दो दिनों से फंसे हुए हैं। इनके बचने की संभावना अत्यंत कम है क्योंकि सुरंग के अंदर लगभग 30 फीट में से 25 फीट तक कीचड़ जमा है, जिससे फंसे हुए श्रमिकों तक पहुंचना चुनौतीपूर्ण हो गया है। हालांकि उन्हें निकालने के लिए हर संभव प्रयास जारी हैं। बचाव कार्य में 2023 में उत्तराखंड की सिल्कयारा बेंड-बरकोट सुरंग में फंसे श्रमिकों के लिए लगी रैट माइनर्स की टीम भी शामिल है। दुर्घटना स्थल पर कीचड़ और मलबे की अधिकता के कारण बचाव कार्य में तीन से चार दिन लग सकते हैं। इस घटना ने सुरंग, सीधर और खदानों में काम करने वाले मजदूरों की सुरक्षा पर गंभीर सवाल खड़े किए हैं।

- **अमृतलाल मारू**, इंदौर

आनलाइन सुरक्षा का सवाल

म्यांमार के साइबर अड्डे से 70 भारतीयों को छुड़ाया गया है, जिन्हें बंधक बनाकर ऑनलाइन साइबर अपराध को अंजाम दिया जा रहा था। यह पहली बार नहीं है जब ऐसा हुआ है, इससे पहले भी कुछ लोगों को छुड़ाया गया है। लेकिन जब तक अपराधियों के गठजोड़ और गिरोह को पूरी तरह नष्ट नहीं किया जाता, तब तक यह गोरख धंधा चलता ही रहेगा। अनुमान है कि अभी भी कई लोगों इनके जाल में फंसे हुए हैं। सरकार को म्यांमार सरकार से बात करके इस गिरोह का खत्म करना होगा और सभी भारतीयों को सुरक्षित देश में लाना होगा। साथ ही, यह भी ध्यान रखना होगा कि कहीं यह भारत में आकर भी खुद का साइबर गिरोह न बना ले। साइबर अपराध का यह जाल बहुत ही खतरनाक है, और इसके लिए हमें बहुत ही सावधान रहना होगा। हमें अपने डेटा की सुरक्षा के लिए बहुत ही सावधानी से काम लेना होगा, और हमें अपने ऑनलाइन लेन-देन के लिए बहुत ही सावधानी से काम लेना होगा। इसके अलावा, हमें अपने बच्चों को भी साइबर अपराध के बारे में जागरूक करना होगा, और उन्हें ऑनलाइन सुरक्षा के बारे में जानकारी देनी होगी। हमें अपने समाज में भी साइबर अपराध के बारे में जागरूकता फैलानी होगी, और लोगों को इसके बारे में जानकारी देनी होगी। सरकार को भी साइबर अपराध के खिलाफ कार्रवाई करनी होगी।

- **विभुक्ति चुपक्या**, खाचरोद

न्याय या अन्याय

दिल्ली की राउज एवेन्यू कोर्ट ने 1984 में सिक्ख विरोधी दंगे के अपराधी पूर्व सांसद सज्जन कुमार को 40 साल बाद उम्रकैद की सजा सुनाई. इससे पूर्व आरोपी पहले से ही उम्र कैद की सजा काट रहा है. जबकि पीड़ित पक्ष मृत्यु दंड देने की मांग कर रहा है. ये पीड़ित पक्ष के साथ न्याय है या अन्याय क्या कहेंगे ? एक तो न्याय देने में इतनी लम्बी समयावधि की प्रक्रिया हुई कि आरोपी से ज्यादा पीड़ा पीड़ित पक्ष को हुई होगी. क्योंकि उम्र कैद की सजा तो आरोपी काट ही रहा था तब उसी तरह की सजा उम्रकैद की दी जाने से फरियादी के साथ कितना न्याय/अन्याय हुआ ये सोचने वाली बात है. देश में किसी भी फरियादी/मुवक्किल को न्याय तभी सही मिल पायेगा जब समय पर फैसला हो. इतनी लम्बी अवधि के पश्चात फैसले से तो ऐसा लगता है जैसे दोषी को नहीं बल्कि फरियादी को ही बिना जेल की सजा काटने को मजबूर होना पड़ जाता है. अतः कोर्ट छोटी हो या बड़ी न्यायविद/सरकार कुछ ऐसे सुशासनित संवैधानिक प्रबंध करें कि समय पर फरियादी को न्याय और दोषी को सजा मिल सके किसी को ऐसा महसूस न होने लगे कि ये मेरे साथ कैसा न्याय हुआ है।

- **शकुंतला महेश नेनावा**, इंदौर

पाठक अपनी प्रतिक्रिया ई-मेल से
responsemail.hindipioneer@gmail.com
पर भी भेज सकते हैं।

हर व्यक्ति अपने तरीके से स्वर्ग जाए, इसके लिए सभी धर्मों को सहिष्णु होना चाहिए। -एपिक्टेटस

संयुक्त राष्ट्र में रूस-यूक्रेन युद्ध के संदर्भ में यूरोपीय प्रस्ताव का विरोध और रूस का समर्थन करना अमेरिका की विदेश नीति में ऐतिहासिक विचलन को दर्शाता है। इसके वैश्विक शक्ति संतुलन पर संभाव्य असर के मद्देनजर जरूरी है कि भारत ऐसा कूटनीतिक संतुलन ढूंढे, जिसमें उसके राष्ट्रीय हितों पर आंच न आए।

अमेरिका का यू-टर्न

अमेरिका ने संयुक्त राष्ट्र महासभा में यूक्रेन और अधिकांश यूरोपीय देशों के प्रस्ताव के विरोध में और रूस के समर्थन में मतदान कर अपनी विदेश नीति में जिस ऐतिहासिक विचलन को दर्शाया है, वह अंतरराष्ट्रीय राजनीति में एक महत्वपूर्ण मोड़ तो है ही, इसके वैश्विक शक्ति संतुलन पर भी गहरे असर होने की आशंका है। गौरतलब है कि रूस-यूक्रेन युद्ध के बीते तीन वर्षों में अमेरिका ने हमेशा ही यूरोपीय देशों के साथ मतदान किया है, यह पहली दफा है, जब उसने अलग राह चुनी है। युद्ध को खत्म कराने की बात तो ट्रंप अपने चुनावी अभियान से ही कर रहे हैं, लेकिन पिछले कुछ समय में उन्होंने रूस के प्रति जिस तरह की निकटता दर्शाई है, उससे यूक्रेनी खेमे में हलचल स्वाभाविक है। खबरों के मुताबिक, युद्ध की शुरुआत से लेकर अब तक अमेरिका यूक्रेन को करीब साठ अरब डॉलर से अधिक की सैन्य सहायता दे चुका है और अब अगर वह अपनी अब तक की नीति से यू-टर्न ले रहा है, तो इससे कई बातें स्पष्ट होती हैं। पिछले हफ्ते ही ट्रंप ने यूक्रेनी राष्ट्रपति जेलेंस्की को तानाशाह कहा था। यह भी गौरतलब है कि हाल ही में सऊदी अरब में रूस व अमेरिका के बीच हुई अहम बैठक में यूक्रेन को आमंत्रित नहीं किया गया था। इससे यह संकेत मिलता है कि अमेरिका अब यूक्रेन को दरकिनार करते हुए रूस से सीधे संवाद की रणनीति अपना रहा है। इतना ही नहीं, अमेरिका ने संयुक्त राष्ट्र में यूरोपीय प्रस्ताव से अलग अपना भी एक प्रस्ताव रखा, जिसमें उसने शांति की बात तो की, लेकिन रूस को हमलावर मानने से इन्कार किया। वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में यह बेशक मुश्किल लगे, लेकिन मुमकिन है कि रूस से नजदीकी बढ़ाने के पीछे ट्रंप का मकसद चीन और रूस में दूरी पैदा करना हो। दूसरी तरफ, अपने चुनावी अभियानों में चीन पर डेढ़ सौ से दो सौ फीसदी टैरिफ लगाने की धमकी देने वाले ट्रंप पिछले कुछ वक्त से चीन के प्रति भी थोड़े

नर्म हुए हैं। दरअसल, अमेरिका के बारे में कहा जाता है कि वह न किसी का दोस्त है और न किसी का दुश्मन। वह सिर्फ अपने हित देखता है। ट्रंप यही कह और कर भी रहे हैं। यह परिदृश्य भारत के लिए, जो हमेशा से अपनी स्वतंत्र विदेश नीति और रणनीतिक स्वायत्तता पर जोर देता आया है, अतिरिक्त सतर्कता की मांग करता है। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर शक्ति संतुलन के नए आकार लेने के क्रम में भारत के लिए जरूरी है कि वह अपने लिए वह कूटनीतिक संतुलन ढूंढे, जिसमें उसके राष्ट्रीय हित अक्षुण्ण बने रह सकें।

महाकुंभ के पाठ

प्रयागराज, काशी या अयोध्या कोई सामान्य शहर नहीं रहे हैं, लिहाजा इन क्षेत्रों में आधारभूत ढांचे का विकास इस प्रकार किया जाना चाहिए कि इन नगरों का कालजयी आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक सत्व भी अक्षुण्ण रहे और ये आगंतुकों का दबाव भी अपने में समा सकें।

प्रयागराज में चल रहा महाकुंभ अपनी परिणति पर है। करोड़ों श्रद्धालु अपनी आस्था के अनुरूप त्रिवेणी में डुबकी लगाकर घर लौट चुके हैं। इस दौरान दो हादसे हुए, जिन्होंने कुछ सुलगते प्रश्नों को पीछे छोड़ दिया। इसमें भगदड़ का पहला दुर्भाग्यपूर्ण मामला प्रयागराज में 28-29 जनवरी की रात में सामने आया, जिसमें मृतकों का सरकारी आंकड़ा 30 है। दूसरी दुखद घटना नई दिल्ली रेलवे स्टेशन परिसर में 15 फरवरी को घटी, जिसमें 18 तीर्थयात्री मारे गए। क्या इन दुर्घटनाओं को रोका जा सकता था? यदि हां, तो इसके लिए कौन जिम्मेदार है? सरकार? श्रद्धालु? या फिर दोनों? वास्तव में देखा जाए, तो इन हादसों का एक बड़ा कारण प्रशासन और तीर्थयात्रियों द्वारा देश के बदलते मानस का संज्ञान न लेना और उसे आत्मसात नहीं करना है।

बलबीर पुंज
भाजपा के पूर्व उपाध्यक्ष एवं पूर्व राज्यसभा सांसद

इस बार महाकुंभ में श्रद्धालु इतनी बड़ी संख्या में क्यों आए? इसके मुख्यतः तीन कारण हैं- आर्थिक समृद्धि, अपनी आस्थागत पहचान के प्रति जागृति और सुरक्षा का भाव। आजादी के 60 साल तक एक साधारण हिंदू, सिर्फ 'हिंदू रेट ऑफ ग्रोथ' सुनता रहा। आठवीं शताब्दी से इस्लामी आक्रांताओं के सतत मजहबी हमले, तलवार के बल पर धर्मांतरण, मान-बिंदुओं और मंदिरों का जमींदोज किया जाना, उसके जीवन का स्थायी भाव जैसा हो गया। इस दौरान, पवित्र नगरियां ध्वस्त या अपवित्र होती रहीं। इसके बाद आए यूरोपीय आक्रांताओं ने अपने अनेक षडयंत्रों में से एक- 'मैकाले शिक्षा प्रणाली' से उनमें स्वयं की आस्था-पहचान के प्रति हीन-भावना भरनी शुरू कर दी।

वर्ष 1947 में इस्लाम के नाम पर खतरनाक विभाजन और अंग्रेजों से स्वतंत्रता के बाद खंडित भारत में उम्मीद थी कि जैसे गांधी-पटेल के नेतृत्व में सोमनाथ मंदिर का पुनर्निर्माण शुरू हुआ, वैसे ही अन्य ऐतिहासिक अन्यायों का परिमार्जन के साथ सभ्यतागत पुनरोद्धार का चक्र पूरा होगा। ऐसा नहीं हुआ, क्योंकि संस्कृति, परंपराओं और मानबिंदुओं पर गौरवान्वित होना 'सांप्रदायिक' करार दे दिया गया। बदली परिस्थितियों में बीते एक

दशक से अपनी पहचान के प्रति पहले से कहीं अधिक जागरूकता और मुखरता दिखाई दी है। संचार संसाधन हैं, निजी आर्थिक समृद्धि भी है और पहचान के प्रति सार्वजनिक संकोच नहीं है। ऐसे में 144 साल बाद आया प्रयाग महाकुंभ सांस्कृतिक गर्व के अवसर में भी दिखाई दिया।

कुंभ मात्र आध्यात्मिक आस्था पर्व नहीं, यह मानव को सनातन के विराट और समग्र स्वरूप, जिसमें बहुलतावाद-समावेश और प्रकृति-ब्रह्मांड के कल्याण की भावना है-उससे जोड़ने का संगम भी है। त्रिवेणी सबके लिए है। इसमें जाति-वर्ग की कोई जगह नहीं। कुंभ दैवीय ऊर्जा का एक पवित्र योग है, जिसमें सूर्य के मकर राशि और बृहस्पति के कुंभ राशि में प्रवेश करने पर एक दिव्य शक्ति का अद्भुत संयोग बनता है। मुझे अपने प्रयागराज प्रवास में जूना अखाड़े के आचार्य महामंडलेश्वर स्वामी अवधेशानंद गिरी महाराज के शिविर में रहने का अवसर मिला। जब स्वामी जी से एक उच्च-मध्यवर्ग के जिज्ञासु सज्जन ने पूछा कि वे किस ईश्वर की उपासना करें, तब उनका उत्तर था कि शामदेवता, कुलदेवी और पूर्वजों के बाद वे किसी भी ईश्वर की आराधना कर सकते हैं। उन्होंने अपने इष्टदेव को उन पर थोपने का प्रयास नहीं किया। यह सनातन संस्कृति का ही मौलिक चरित्र है, जिसमें विचारों-असहमति की स्वतंत्रता है, जो 'मैं ही सच्चा, तू झूठा' की संकीर्ण अवधारणा से मुक्त है।

समाज में बदलते चिंतन का संज्ञान लेकर केंद्र और उत्तर प्रदेश सरकार ने महाकुंभ के लिए मिलकर 12,000 करोड़ रुपये से अधिक का बजटीय प्रावधान और विभिन्न स्तर पर अभूतपूर्व व्यवस्थाओं का प्रबंध किया। लेकिन, दूसरी तरफ प्रशासनिक तंत्र इस चेतना और ज्वार का सही आकलन नहीं कर पाया। कई अधिकारियों-कर्मचारियों ने इस अपेक्षित भावना के प्रतिकूल इसे नियमित दायित्व की तरह लिया। साथ ही, उत्साही जन इस बात को नहीं समझ पाए कि उत्साह-उमंग के साथ अनुशासन और नागरिक-कर्तव्यबोध भी आवश्यक है। आवश्यक यह है कि वे महाकुंभ या फिर अपने अन्य पवित्र स्थलों पर अनियंत्रित भीड़ के बजाय आस्थावान तीर्थयात्री बनकर जाएं। ऐसा नहीं है कि तीर्थस्थलों में दुर्घटनाएं केवल भारत में होती हैं। हज यात्रा के दौरान मक्का में पर्याप्त प्रबंध होने के बावजूद आठ से अधिक भगदड़ की घटनाएं हो चुकी हैं। इनमें सबसे भीषण हादसा वर्ष 2015 का था, जिसमें 2,400 से अधिक लोगों की जान गई थी। इसी तरह वर्ष 2016-24 के बीच नाइजीरियाई चर्चों में भगदड़ की कई घटनाओं में 100 से अधिक लोगों की जान जा चुकी है। स्वाभाविक ही, जहां भी अतिरेक होगा, व्यवस्थागत चुनौतियां बढ़ जाती हैं। जरूरत व्यवस्था के स्तर पर सही अनुमान और जन के स्तर पर जवाबदेही की है।

कुछ स्वयंभू कटाक्ष करते हुए पूछते हैं-'क्या गंगा में डुबकी लगाने से गरीबी दूर होगी, भूख मिटेगी?' जाहिर है, कोई भी आस्था से जुड़ा आयोजन गरीबी उन्मूलन कार्यक्रम का भाग नहीं होता। रही बात भूख की, तो महाकुंभ में 500 से अधिक छोटे-बड़े भंडारे चलते रहे हैं। वर्ष 2013 और 2019 में क्रमशः 12 करोड़ और 24 करोड़ श्रद्धालु कुंभ आए थे। भारतीय उद्योग परिसंघ (सीआईआई) के अनुसार, 2019 के प्रयागराज अर्धकुंभ आयोजन से सरकार को 1.2 लाख करोड़ रुपये का राजस्व प्राप्त हुआ और इससे छह लाख से अधिक रोजगार के अवसर सृजित हुए। इस महाकुंभ में 60 करोड़ से अधिक श्रद्धालु स्नान कर चुके हैं। इनमें अति-गरीब से लेकर संपन्न व्यक्ति शामिल हैं, जिसमें मध्यवर्ग के परिवारों की संख्या सर्वाधिक है। इनमें से लाखों ने अयोध्या-काशी में भी पवित्र दर्शन किए।

यदि प्रत्येक मध्यवर्ग तीर्थयात्री औसतन चार-पांच हजार रुपये व्यय कर रहा है, तो स्वाभाविक रूप से स्थानीय अर्थव्यवस्था और उससे जुड़े लोगों को कितना लाभ होगा, इसका सहज अनुमान लगाया जा सकता है। पर्यटन की दृष्टि से दिल्ली, जयपुर और आगरा को पारंपरिक रूप से 'स्वर्णिम त्रिकोण' माना जाता है। बदलते परिप्रेक्ष्य में प्रयागराज, काशी और अयोध्या भारत के 'अध्यात्म त्रिकोण' के रूप में बनते जा रहे हैं। प्रयागराज, काशी या अयोध्या सहित अन्य तीर्थस्थल कोई सामान्य शहर नहीं हैं और न ही वे अपने स्तर पर आवास, पर्यटन या रोजगार का साधन हैं। लिहाजा इन क्षेत्रों में आधारभूत ढांचे का विकास इस प्रकार किया जाना चाहिए कि इन नगरों का कालजयी आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक सत्व भी अक्षुण्ण रहे और ये आगंतुकों का दबाव भी अपने में समा सकें। edit@amarujala.com

जीवन धारा

श्रीश्री रविशंकर

भगवान शिव कहीं बाहर नहीं हैं, वे किसी मंदिर में या हिमालय में कहीं दूर नहीं बैठे हैं और वे मानसरोवर झील या कैलाश पर्वत पर भी नहीं हैं। भगवान शिव हर जगह मौजूद हैं। बस यह जान लें कि शिव सर्वव्यापी हैं।

शिव तो आपके भीतर ही मौजूद हैं

आज महाशिवरात्रि के इस पावन दिन पर आपको बस दो चीजें ध्यान में रखनी हैं, जो आपके मन को तुरंत शांति और खुशी प्रदान करेंगी। पहली, जान लें कि ईश्वर हर पल मेरे साथ हैं और वे मेरी हर जरूरत पूरी करेंगे। दूसरी, इस गहरी आस्था के साथ बाहरी विकर्षणों और चिंताओं से मुक्त हो जाएं, आराम करें और आत्मविश्वास में डूब जाएं। महाशिवरात्रि का मतलब है, गहन विश्राम की स्थिति में आना। महाशिवरात्रि मन और आत्मा को गहन विश्राम प्रदान करती है। मन अक्सर किसी न किसी चीज के पीछे भागता रहता है या किसी एक चीज की इच्छा रखता है। वह आध्यात्मिक या भौतिकवादी हो सकता है। बस इतना ही याद रखना है कि भगवान आपको दोनों चीजें देने के लिए मौजूद हैं, बस आप चिंता न करें।

आपको भगवान के साथ गहरा संबंध स्थापित करना चाहिए और याद रखना चाहिए कि 'ईश्वर मेरे हैं'। इस अटूट विश्वास पर भरोसा कीजिए, आपको जो भी चाहिए, वह अवश्य मिलेगा। जिस क्षण भी यह विश्वास आपके भीतर से जगता है, मन शांत हो जाता है और विश्राम की स्थिति में आ जाता है। इस प्रकार की शांति जब हम कीर्तन करते हैं, तब हमें प्राप्त होती है। बगैर मन से भजन गाना अच्छा नहीं होता। जब आप गीत सुनते हैं और साथ में गाते हैं, तो ईश्वर के प्रति गहरी भक्ति और प्रेम की भावना के साथ उसे गाना चाहिए। जब हम पूरे दिल से गाते हैं और गीत के साथ एक हो जाते हैं, तो कुछ ही समय में हम ईश्वर के साथ एक हो जाते हैं। भगवान शिव कहीं बाहर नहीं हैं, वे किसी मंदिर में या हिमालय में कहीं दूर नहीं बैठे हैं और वे मानसरोवर झील या कैलाश पर्वत पर भी नहीं हैं। भगवान शिव तो आपके भीतर ही मौजूद हैं, वे हर जगह मौजूद हैं। बस इस बात को जानना होगा। शिव सर्वव्यापी हैं, वे वही हैं, जिन्हें आप हर जगह देखते हैं, चाहे वह पहाड़ों में, पौधों में, पेड़ों आदि में। वह दृश्य और द्रष्टा हैं। बस बार-बार स्वयं को यह बात याद दिलाते रहें और आराम करें। कुछ दिनों में आप चेतना की गहरी और अंतिम अवस्था प्राप्त कर लेंगे और आपके मन में अतिरिक्त खुशी और शांति मिलेगी। आप भीतर से कमल के फूल की तरह खिल उठेंगे। महाशिवरात्रि पर बस आपको इतना ही करने की जरूरत है। अपने मूल अस्तित्व के भीतर गहन विश्राम करें। जब आप ध्यान के माध्यम से ज्ञान अर्जित करते हैं, तो यह आपके मन और बुद्धि को शुद्ध करता है। मन उन छोटी-छोटी लालसाओं और इच्छाओं को छोड़ देता है, जिनमें वह अक्सर उलझा रहता है और इस तरह आपकी बुद्धि शुद्ध हो जाती है। इस तरह हम पूजा के दौरान या उसके बाद भजन के माध्यम से भी ध्यान की अवस्था में चले जाते हैं। जिस प्रकार ज्ञान बुद्धि को शुद्ध करता है, वैसे ही भजन गाने से हमारी भक्ति की भावना शुद्ध और उन्नत होती है। जब आपका मन और भावनाएं, दोनों ही पूरी तरह से ऊपर उठकर खिल जाती हैं और आप ध्यान की परम अवस्था में पहुंच जाते हैं, जहां स्वयं शिव हैं, तब गहन विश्राम की अवस्था में परम शिव के साथ एक हो जाते हैं।

परम अवस्था प्राप्त करें

सूत्र

परम अवस्था सायुज्य है-जिसका अर्थ है ईश्वर के साथ पूरी तरह से एक हो जाना, इस तरह विलीन हो जाना कि आपको अपने और ईश्वर के बीच कोई अंतर न दिखे। उस अवस्था में दो नहीं (कोई द्वैत नहीं होता), केवल एक होता है। इस तरह ज्ञान की परम अवस्था प्राप्त करें।

दूसरा पहलू

मिस्र में थोड़े समय के लिए शासक रहे खुतमोस द्वितीय की कब्र खाली मिली है, पर उसमें इतिहास भरा पड़ा है।

मिस्र के एक मकबरे की रोमांचक खोज

पुरातत्वविदों ने मिस्र में एक रोमांचक खोज की है। यह फराओ थुतमोस द्वितीय की कब्र है। थुतमोस द्वितीय एक ऐसा शासक था, जिसकी प्रसिद्धि उसकी सौतेली बहन (जो बाद में पत्नी बनी) रानी हत्शेपसुत के कारण लंबे समय तक दबी रही। यह उत्खननीय खोज पश्चिमी घाटी (जो राजा की नहीं, रानियों की कब्रगाह है) में है, जो डेयर अल बहारी परिसर के पास है, जिसमें हत्शेपसुत की कब्र है। हम दोनों ने लगभग 15 साल पहले इस शानदार स्थल पर पुरातत्वविदों के रूप में साथ काम किया था।

एना एम. कोटारबा मोरली

थुतमोस द्वितीय एक ऐसा शासक था, जिसकी प्रसिद्धि उसकी सौतेली बहन (जो बाद में पत्नी बनी) रानी हत्शेपसुत के कारण लंबे समय तक दबी रही।

थुतमोस द्वितीय के मकबरे को सौ साल पहले खोजे गए तूतनखामुन के मकबरे के बाद पहली व सबसे बड़ी खोज माना गया है। खाली होने के बावजूद यह मिस्र के इतिहास के परिवर्तनकारी काल को समझने के लिए अहम है। थुतमोस द्वितीय ने 15वीं शताब्दी ईसा पूर्व के पहले भाग में शासन किया। इस प्रकार वह 18वें मिस्र राजवंश का चौथा शासक बना, और उसका शासन काल करीब दस वर्ष का रहा था, कुछ शोधकर्ता तो सिर्फ तीन वर्ष ही बताते हैं। वह महान फराओ थुतमोस प्रथम व उनकी छोटी पत्नी मुत्नोफ्रेट का बेटा था। थुतमोस द्वितीय ने शासन और वंश को मजबूत करने के लिए अपनी सौतेली बहन रानी हत्शेपसुत से शादी की। उनकी एक बेटी थी, जिसका नाम नेफरूरा था। उनकी मृत्यु के बाद हत्शेपसुत राजगद्दी पर बैठीं, जो सबसे प्रसिद्ध व सफल महिला शासकों में से एक थीं। थुतमोस प्रथम के उत्तराधिकारी के रूप में थुतमोस द्वितीय ने मिस्र के दक्षिणी क्षेत्र में अपने पिता की सैन्य नीति को कायम रखा। लेकिन थुतमोस द्वितीय के सैन्य अभियान उसके पूर्ववर्तियों और उत्तराधिकारियों की भव्य विजयों की तुलना में छोटे थे। अधिकांश इतिहासकारों का मानना है कि वह कमजोर शासक था और उसकी मृत्यु से बहुत पहले ही हत्शेपसुत शासन में प्रमुख भूमिका निभाने लगी थीं। हत्शेपसुत अन्य लिंग इससे असहमत हैं।

हाल ही में खोजी गई कब्र खुतमोस द्वितीय की स्थिति और तत्कालीन मिस्र की सामाजिक-राजनीतिक संरचना में उनकी भूमिका के बारे में नए विवरण प्रकट करती है-यह क्षेत्रीय विस्तार, धन और राजनीतिक साजिश का दौर था। थुतमोस द्वितीय को एक अप्रभावी शासक के रूप में चित्रित किया गया है। और नवीनतम खोज इसका खंडन नहीं करती है। उपलब्ध अभिलेखों की कमी के कारण थुतमोस द्वितीय का शासन रहस्य में डूबा हुआ है। वास्तव में, हत्शेपसुत के उत्थान का मार्ग प्रशस्त करना उनका सबसे बड़ा योगदान हो सकता है। *-साभार कटारजिन कारपीक (द कन्वर्सेशन से)*

आंकड़े

लोकतंत्र व संतुष्टि

एक सर्वे रिपोर्ट के अनुसार, भारत की जनता अपने लोकतंत्र से दुनिया के अन्य देशों की अपेक्षा सबसे ज्यादा संतुष्ट है।

भारत	68%
जर्मनी	56%
जापान	45%
अमेरिका	13%
चीन	5%

आंकड़े लोकतंत्र से संतुष्ट आबादी के, प्रतिशत में | स्रोत : LR survey

उपमन्यु से मां बोलीं, 'सबका ख्याल रखने वाले एवं दुखों को हरने वाले भगवान शिव हैं। तू उनका भक्त बन, उनमें मन लगा और नमः शिवाय मंत्र का जाप कर।'

'नमः शिवाय' का जाप

उपमन्यु का नाम भगवान शिव के परम भक्तों में लिया जाता है। एक बार उपमन्यु अपने मामा के यहां गए थे। उन्हें पीने के लिए जरा-सा दूध दिया गया पर मामा के बेटे को इच्छानुसार दूध पीने को मिला। यह देखकर बालक उपमन्यु दुखी हुए और वह अपनी मां के पास जाकर बड़े प्रेम से बोले-'मां मुझे गाय का दूध पीना है।' बालक उपमन्यु बार-बार दूध को याद करके रोते हुए माता से दूध मांगते रहे, तब हारकर माता ने बालक को बहलाने के लिए चावल का आटा जल में घोलकर उपमन्यु को दे दिया। उन्होंने मां से कहा कि यह दूध नहीं है।

अंतर्यात्रा
संकलित

माता बोलीं-बेटा! तू सत्य कहता है, निर्धनता के कारण मैंने तुम्हें चावल का आटा घोलकर दिया। लेकिन इस जगत में सबका ख्याल रखने वाले एवं दुखों को हरने वाले भगवान शिव हैं। वह प्रसन्न हुए तो हर चीज तुम्हें देंगे। मां की बात हृदय में बैठ गई, उपमन्यु ने पूछा-'मां! भगवान शिव जी कौन हैं? कहां रहते हैं? उनका कैसा रूप है, मुझे वे किस प्रकार मिलेंगे।' बालक के सरल वचनों को सुनकर मां बोलीं-'तू उनका भक्त बन, उनमें मन लगा, उनमें विश्वास रख, उनकी ही शरण चला जा, 'नमः शिवाय' मंत्र का जाप कर।' मां के कहने पर, उपमन्यु ने कठोर तपस्या की। प्रसन्न होकर भगवान शिव ने उन्हें दर्शन देकर कहा, 'बेटा, तू आज से अजर, अमर और तेजस्वी हो गया और तेरे सारे दुखों का सदा के लिए नाश हो गया, तू मेरा अनन्य भक्त है।'

अमर उजाला

पुराने पन्नों से — 07 अक्तूबर, 1965

हम लड़ना और जान की बाजी लगाना भी जानते हैं

हम लड़ना जानते हैं और जान की बाजी भी लगाना जानते हैं

कश्मीर की चन्दन-घाटी की सुख बनाने का संकल्प की अभिव्यक्ति में सहयोग दें

केंद्रीय मंत्री जगजीवन राम ने कहा कि भारत ने कभी किसी देश को गुलाम नहीं बनाया। पाकिस्तान समझता था कि हम लड़ना क्या जानें। लेकिन आज वह समझ गया कि हम लड़ना जानते हैं और जान की बाजी लगाना भी जानते हैं।

आस्था और अर्थव्यवस्था

सीएमआईई की रिपोर्ट कहती है कि 2027 तक देश में धार्मिक पर्यटन का सालाना बाजार 270 अरब रुपये से ज्यादा होने की उम्मीद है।

मधुरेंद्र सिन्हा — आर्थिकी

काशी विश्वनाथ, अयोध्या और अब प्रयागराज-इन तीनों में एक बड़ी समानता है कि वहां दूर-दूर से आने वाले तीर्थयात्रियों का तांता लगा हुआ है। एक आस्था है, जो उन्हें सनातनियों के पवित्र स्थानों पर लिए जा रही है। लेकिन इतनी बड़ी संख्या में जब श्रद्धालु यात्रा करते हैं, तो वे खर्च भी बहुत करते हैं। ट्रांसपोर्ट और खाने-पीने पर तो वे पैसे खर्च करते ही हैं, उन धार्मिक स्थलों की चुनिंदा यादगार चीजें या अपने इष्ट मित्रों को देने के लिए उपहार वगैरह भी खरीदते हैं।

भारत में ऐसे कई प्राचीन धार्मिक स्थल हैं, जो साल के कुछ महीने पर्यटकों या भक्तों से भरे रहते हैं। प्रयागराज में दावा किया गया कि महाशिवरात्रि से पहले 60 करोड़ से भी ज्यादा लोग संगम में स्नान कर चुके हैं। बेशक इस आंकड़े में थोड़ा बहुत ऊपर-नीचे हो सकता है, लेकिन यह संख्या इतनी बड़ी है कि इससे बहुत फर्क नहीं पड़ता है। दुनिया के इतिहास में इतना बड़ा धार्मिक समागम कभी नहीं हुआ है। प्रयागराज के साथ ही अयोध्या में भी लाखों लोग पहुंचकर रामलला के दर्शन कर रहे हैं। ऐसा ही कुछ वाराणसी में भी हो रहा है, जहां लाखों लोग हर दिन बाबा विश्वनाथ के दर्शन कर रहे हैं।

भारतीय अर्थव्यवस्था पर नजर रखने वाली सेंटर फॉर मॉनिटरिंग इंडियन इकनॉमी (सीएमआईई) ने अपनी एक रिपोर्ट में कहा है कि भारत का धार्मिक पर्यटन बाजार तेजी से बढ़ रहा है और 2024 में इसका आकार 118 करोड़ 80 लाख डॉलर था। एजेंसी ने अनुमान लगाया है कि 2027 तक आते-आते यह राशि 15.1 फीसदी की दर से बढ़कर सालाना 315 करोड़ 90 लाख डॉलर यानी लगभग 270 अरब रुपये हो जाएगी। यह राशि ज्यादा भी हो सकती है।

सीएमआईई ने इसके कई कारण बताए हैं। सबसे बड़ा कारण यह है कि इन धार्मिक स्थलों में तथा उनके इर्द-गिर्द बुनियादी ढांचों का बढ़िया विकास हुआ है। सरकार ने काफी सुविधाएं दी हैं, जैसे सड़कें, पार्किंग, होटलों और गेस्ट हाउसों को जमीन, दुकानों का आवंटन, सार्वजनिक परिवहन को बढ़ावा वगैरह। पहले की तरह अब यहां अव्यवस्था और लूट नहीं है। ऑनलाइन व्यवस्था हो जाने से बाहरी तीर्थयात्रियों को आरक्षण लेने में आसानी होती है। स्थानीय निवासियों द्वारा भी धार्मिक पर्यटन से जुड़े कारोबार में दिलचस्पी लेने से अर्थव्यवस्था मजबूत हुई है।

अयोध्या और वाराणसी में अब फाइव स्टार होटल खुल रहे हैं, जो यह दर्शाता है कि देश का समृद्ध वर्ग भी धार्मिक पर्यटन में दिलचस्पी ले रहा है। यह यह वर्ग है, जो काफी खर्च करता है और जिसका असर यहां के उद्योगों, खासकर कुटीर उद्योगों पर पड़ता है। लोगों की खपत का अर्थव्यवस्था पर असर पड़ता है और ज्यादा खपत होने से जीडीपी भी बढ़ती है। धार्मिक स्थलों में लोग जब बड़े पैमाने पर खरीदारी करते हैं, तो उससे न केवल स्थानीय कारोबार बढ़ता है, बल्कि रोजगार के साधन भी बढ़ते हैं। धार्मिक पर्यटन बढ़ने से बनारसी साड़ियों के व्यापार में उल्लेखनीय बढ़ोतरी हुई है और खाने-पीने की वस्तुओं की दुकानों में भी भारी वृद्धि हुई है, जिससे स्थानीय लोगों की माली हालत तो सुधरी ही है, उनके पास कर्मचारियों की संख्या भी बढ़ी है यानी रोजगार भी बढ़ा है। यह रोजगार भले ही मौसमी हो, लेकिन इसने कमाई का एक बड़ा जरिया बना दिया है।

देश की अर्थव्यवस्था पर धार्मिक पर्यटन के प्रभाव को देखते हुए भारत सरकार ने कई कल्याणकारी योजनाएं बनाई हैं। इनमें एक स्कीम है-प्रसाद यानी तीर्थस्थल सुधार और धरोहर विकास उद्यम। स्वदेश दर्शन स्कीम 2.0 के लिए सरकार ने 28 राज्यों तथा दो केंद्रशासित प्रदेशों के लिए 6,121.69 करोड़ रुपये का बजट स्वीकृत किया। इसके तहत 15 थीम आधारित सर्किट, जैसे बौद्ध, हिमालय, कृष्ण, रामायण, आध्यात्मिक, सूफी और तीर्थंकर का विकास किया जा रहा है, ताकि सभी धर्मों के लोगों को सुविधा मिले। इसके तहत अमरावती, द्वारका, सोमनाथ, गया, वाराणसी, गंगोत्री-यमुनोत्री, अजमेर शरीफ वगैरह को विकसित किया गया और अब भी केंद्र सरकार इन पर खर्च कर रही है। इसी वजह से 2021 से लेकर 2022 के एक वर्ष की अवधि में पर्यटन से प्राप्त कुल राजस्व दोगुना हो गया।

दरअसल, निजी-सार्वजनिक भागीदारी का फॉर्मूला यहां भी लागू हो रहा है। स्थानीय समुदायों को साथ लेकर विकास करना बेहतर परिणाम देता है। इससे स्थानीय स्तर पर राजस्व में बढ़ोतरी होती है। देश में डिजिटल क्रांति होने से हमारे तीर्थ स्थलों के बारे में, उनके कामकाज के बारे में पारदर्शिता आई है, जिससे श्रद्धालुओं में एक विश्वास बना रहता है। धार्मिक पर्यटन ने देश को एक सूत्र में मजबूती से पिरोने का काम किया है। सभी जानते हैं कि हमारे तीर्थ स्थलों की राष्ट्र निर्माण में बड़ी भूमिका रही है और अब वे राजस्व सृजन में भी तेजी से कदम बढ़ा रहे हैं।